RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 16	अंक : 2	मुम्बई, मई 2026	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 16	ISSUE : 2	MUMBAI, MAY 2026	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

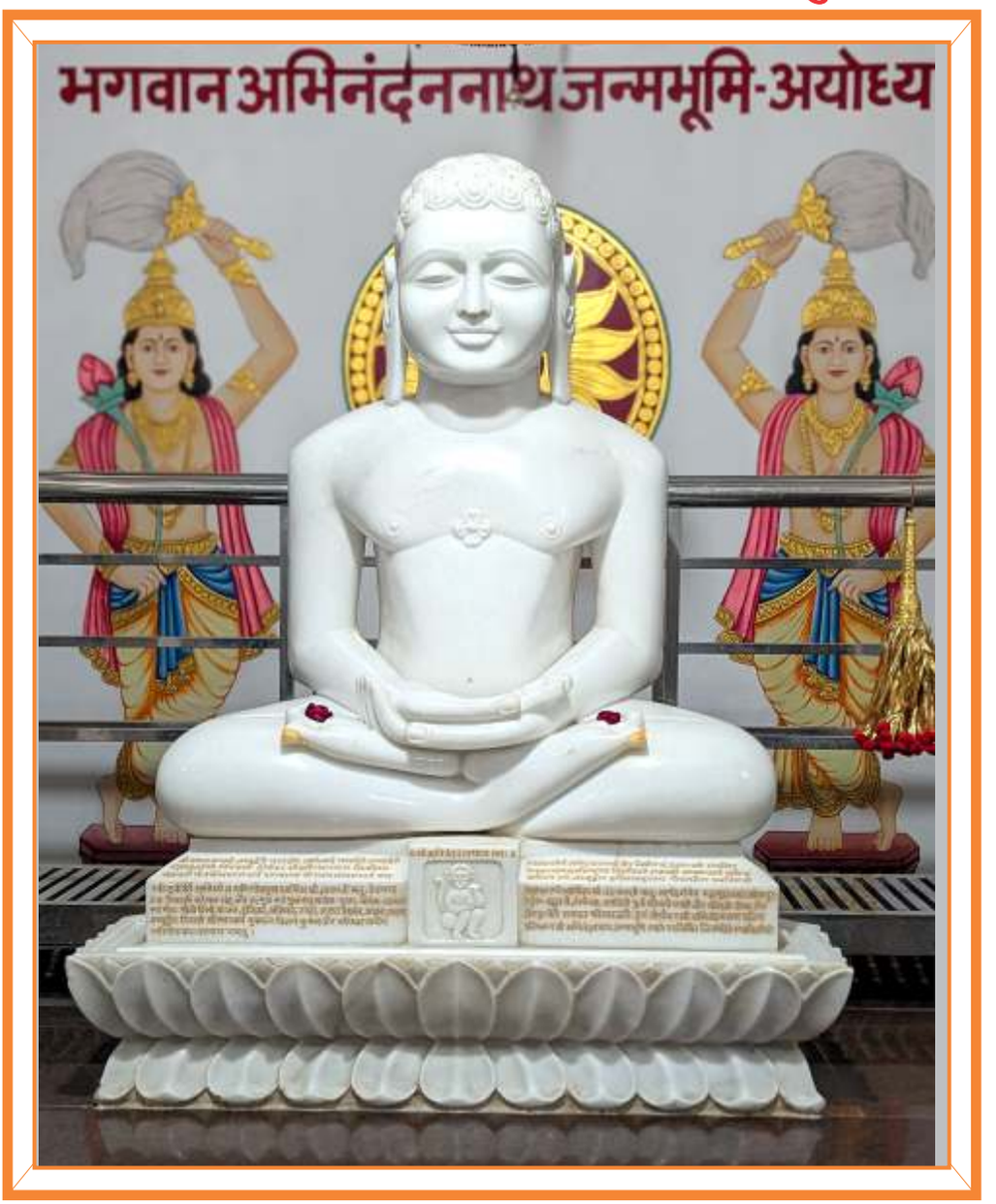

तीर्थंकर श्री 1008 अभिनन्दननाथ भगवान, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 16 अंक 2 मई 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 00121010110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2552

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'	7
मतभेद से मनभेद तक: जैन संस्थाओं के सामने गंभीर चुनौती	8
जैन धर्म या जाति ? जनगणना में अनसुलझे प्रश्न ?	10
जागो जैन समाज : जनगणना में धर्म 'जैन'	15
भारतीय इतिहास की चुप्पी और जैन सम्राटों की अनसुनी गाथा पर शोध अध्ययन हों	19
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तीर्थ चक्रवर्ती योजना	30

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

अयोध्या चिंतन बैठक

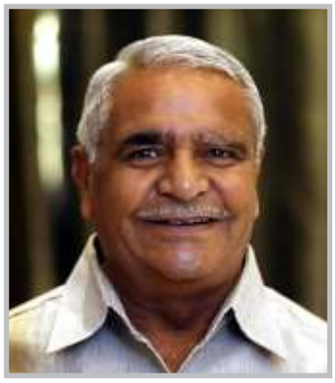

भगवान ऋषभदेव आदि 5 तीर्थंकरों की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या में विराजमान तीर्थोद्धार की पावन प्रेरिका, **गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी ससंघ** के पावन सान्निध्य में भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक गत 10 मई 2026 को सम्पन्न हुई। बैठक में दो तिहाई सदस्यों की उपस्थिति के कारण यह बैठक अत्यन्त सफल एवं उपयोगी रही। मात्र कुछ सदस्य अपरिहार्य कारणों से न आ सके।

यह बैठक मुख्यतः कमेटी के **शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष (22.10.26 से 22.10.27)** कार्यक्रमों की रूपरेखा के निर्धारण एवं विचार हेतु आयोजित की गई थी जिस पर पर्याप्त मंथन किया गया। विभिन्न सदस्यों, उ.प्र.- उत्तराखंड अंचलीय समिति, मध्यांचल समिति तथा अन्य सभी अंचल से पधारे पदाधिकारी और उपस्थित तीर्थ भक्तों से विचार-विमर्श के माध्यम से निम्न बिन्दु निष्कर्षतः प्राप्त हुए:

1. प्रचार-प्रसार: तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना के 124 वर्ष बाद भी ग्रामीण अंचलों के अनेक जैन बन्धु कमेटी के नाम से भी परिचित नहीं हैं। अतः प्रिन्ट, इलेक्ट्रॉनिक, सोशल मीडिया और तीर्थक्षेत्रों पर बोर्ड व फोल्डर के माध्यम से सघन अभियान चलाया जाए ताकि हर परिवार कमेटी के महत्त्व को जाने। जागरूकता के अभाव में कोई भी तीर्थ सुरक्षित नहीं है।

2. युवाओं का जुड़ाव: IT क्षेत्र के युवाओं को विभिन्न नीतियों के अंतर्गत तीर्थों की ओर मोड़ना होगा। इसके लिए तीर्थ क्षेत्रों पर सुविधाजनक आवास एवं शुद्ध पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना होगा। इससे सप्ताहांत में वे तीर्थों पर जाने के लिए प्रेरित होंगे।

3. वित्तीय सुदृढ़ीकरण: विचार-विमर्श के बाद निम्न निर्णय लिए गए:

I. गुल्लक योजना: प्रत्येक दि. जैन मन्दिर में तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखी जाये। वर्ष 2025-26 में इसके परिणाम उत्साहवर्द्धक रहे हैं। इससे कमेटी को नियमित आय होगी।

II. तीर्थ रक्षा कलश: आगामी वर्षायोग में मुनिराजों/आर्यिकाओं के कलश स्थापना के समय **'तीर्थ रक्षा कलश'** स्थापित किया जाये। इससे प्राप्त राशि केन्द्रीय कमेटी के खाते में जमा होगी।

III. सहयोग राशि व सम्मान: 1 लाख रुपये की सहयोग राशि देने वाले दातार को **'तीर्थ चक्रवर्ती'** की उपाधि से सम्मानित किया जायेगा। इसके अलावा समाज के श्रावक-श्राविकायें 500 या 1100 रुपये का नियमित वार्षिक अंशदान भी दे सकते हैं।

4. गौरवशाली इतिहास का ज्ञान: युवाओं और बहनों को धर्म, दर्शन और समाज के गौरव की जानकारी देने हेतु तीर्थों का प्रामाणिक इतिहास, आचार्यों/विद्वानों के व्यक्तित्व और महान जैन व्यक्तियों पर आधारित कालजयी प्रकाशन तैयार किए जा रहे हैं।आपके अन्य सुझावों का भी स्वागत है।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव

प्रिय बन्धुओं। जयजिनेन्द्र।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में दिनांक 10 मई की पदाधिकारी परिषद एवं उ. प्र. - उत्तराखंड की अंचलीय समिति की बैठक सक्रिय एवं व्यापक सहभागिता के कारण अत्यन्त सफल रही। बैठक के आयोजन में सहभागी सभी तीर्थभक्तों, कार्यकर्ताओं का आभार। सभी को परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी (ससंघ) के दर्शन एवं आशीर्वाद का भी लाभ मिला।

यह बैठक मुख्यतः भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना के 124 वर्ष पूर्ण होने पर 22 अक्टूबर 26 से 22 अक्टूबर 27 तक प्रस्तावित कार्यक्रमों के स्वरूप, प्रकृति, संभावित स्थानों एवं तिथियों पर विचार हेतु आयोजित की गई थी। सर्वानुमति से निर्णय किया गया कि आगामी 21-22 अक्टूबर 2026 को जम्बूस्वामी की निर्वाण स्थली मथुरा चौरासी में महोत्सव का शुभारम्भ किया जाये। पदाधिकारी परिषद की आगामी बैठकों, जो शीघ्र ही नियमित रूप से होगी, में आगामी कार्यक्रमों पर अधिक विस्तार से विचार होगा। ज्ञातव्य है कि कमेटी की स्थापना 124 वर्ष पूर्व मथुरा चौरासी में ही हुई थी।

124 वर्ष पूर्व जब कमेटी की स्थापना हुई थी तब तीर्थों की रक्षा एवं विकास की जो आवश्यकता थी वह आज भी उतनी ही जरूरी अपितु कहीं अधिक जरूरी है। किन्तु राष्ट्रीय तीर्थक्षेत्र कमेटी आंचलिक समितियों के सक्रिय सहयोग के बिना किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकती। अतः मैं सभी अंचल के सम्मानित अध्यक्षों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने-अपने अंचल से अध्यक्ष सहित 5 व्यक्तियों (पदाधिकारियों/ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं) के नाम भेजें जिन्हें शतकोत्तर रजत जयन्ती स्थापना वर्ष की विभिन्न समितियों में सम्मिलित किया जा सकेगा।

पुनः अनुरोध है कि आप अपने अंचल से 1-2 ऐसे व्यक्तियों के नाम, फोन नं. सहित मुझे भेजें जिन्हें शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के कार्यक्रमों में ध्वजारोहणकर्ता, दीप प्रज्जवलनकर्ता, मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, आदि विभिन्न रूपों में आमंत्रित कर सम्मानित किया जा सके। हमें शतकोत्तर रजत जयन्ती वर्ष के कार्यक्रमों का संयोजन इस रूप में करना है जिससे तीर्थक्षेत्र कमेटी की जन-जन तक पहुँच हो विशेषतः ग्रामीण अंचलों एवं एकल परिवार के रूप में महानगरों में निवास करने वाले युवाओं तक भी हो एवं उनको तीर्थक्षेत्र कमेटी से सक्रिय रूप से जोड़ा जा सके।

आज आवश्यकता इस बात की है कि :- ग्रामीण अंचलों तक हम तीर्थक्षेत्र कमेटी के महत्त्व, आवश्यकता, उपयोगिता एवं लक्ष्यों को पहुँचायें। इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गुल्लक योजना, तीर्थ रक्षा कलश योजना, वार्षिक सहयोग प्रदान करने की संकल्प पत्र योजना को जन-जन तक पहुँचायें।

अंचल के प्रत्येक तीर्थ पर कुछ-कुछ कार्यक्रम इस वर्ष आयोजित करें एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा किये गये विकास कार्यों की जानकारी भी समाज तक पहुँचायें। इस शतकोत्तर रजत जयन्ती स्थापना वर्ष पर आयोजित किये जा रहे स्थायी प्रकृति के कार्यों में सभी सहयोग करें। प्रकाशन एवं निर्माण के कार्य ही स्थायी होते है एवं सदियों तक याद किये जाते हैं। फलतः प्रचारात्मक सम्मेलनों के साथ प्रकाशन के भी कार्य करें।

सबसे अन्त में मैं कहना चाहूँगा कि बिना धन के कोई काम नहीं हो सकता है अतः मैं अनुरोध कर रहा हूँ कि आप अपने-अपने अंचल से 1-1 लाख रू. की सहयोग राशि प्रतिव्यक्ति अधिकाधिक सक्षम महानुभावों से प्राप्त करें। हम उन्हें **तीर्थ चक्रवर्ती** के रूप में सम्मानित करेगें एवं इस राशि का उपयोग शतकोत्तर रजत जयन्ती स्थापना वर्ष के कार्यक्रमों के संयोजन में करेंगे। आप 1 लाख से अधिक राशि भी प्राप्त कर सकते है।

सहयोग की आशा में शुभकामनाओं सहित।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष की प्रकाशन योजनाऐं

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने अपनी स्थापना के 124 वर्ष पूर्ण होने पर 22.10.26 से 22.10.27 तक शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष मनाने का निश्चय किया है। इस वर्ष के कार्यक्रमों में तीर्थों के संरक्षण एवं विकास, तथा तीर्थों के प्रति जनजागरूकता उत्पन्न करने हेतु अनेक सम्मेलनों के आयोजन के अतिरिक्त स्थायी महत्त्व की अनेक प्रकाशन योजनाओं को भी हस्तगत किया गया है। इनमें से कुछ योजनाओं को स्वयं तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने अधीन रखेगी एवं शेष अन्य समान विचारधारा की अन्य संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वित की जायेगी। हम निम्नांकित 07 योजनाओं का संक्षिप्त परिचय यहाँ क्रमशः प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रकाशन योजनाओं हेतु सामग्री के संकलन, सम्पादन एवं व्यवस्थित प्रकाशन हेतु आप सबका तन-मन-धन से सहयोग अपेक्षित है।

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ :

भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाणोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में पं. बलभद्र जी जैन के नेतृत्व में भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली द्वारा सम्पूर्ण भारत के दिगम्बर जैन तीर्थों के इतिहास, पुरातत्त्व, महत्त्व, अतिशय, तत्कालीन उपलब्ध सुविधाओं एवं अवस्थिति आदि के बारे में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया था। विगत 50 वर्षों के कालखण्ड में नवीन ऐतिहासिक तथ्यों के प्राप्त होने, पुरातात्विक साक्ष्यों की उपलब्धता, तीर्थों पर संचार, आवागमन के साधनों, आवासीय एवं अन्य सुविधाओं के विकास के कारण अब इन खण्डों का पुनर्लेखन एवं प्रकाशन आवश्यक हो गया है। स्वयं तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा इन वर्षों में महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की गई है। एतदर्थ निम्नवत् दायित्व का विभाजन कर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है।

प्रो. अनुपम जैन, इन्दौर: प्रधान सम्पादक
क्षेत्रवार पुनर्लेखन का दायित्व :
प्रो. डी. ए. पाटिल, जयसिंहपुर:
महाराष्ट्र एवं गुजरात
प्रो. नरेन्द्र कुमार जैन, टीकमगढ़:
राजस्थान
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद:
म. प्र. एवं छत्तीसगढ़
डॉ. सुनील कुमार जैन, संचय, ललितपुर:
उ.प्र. एवं उत्तराखण्ड
डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन, भगवा:
सम्पूर्ण पूर्वी भारत (बिहार, बंगाल, असम आदि)
श्री विजयकुमार जैन 'बाबाजी', सागर:
सम्पूर्ण दक्षिण भारत

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं जम्मू कश्मीर (उत्तर भारत) का दायित्व अभी देना शेष है जिसकी हम शीघ्र घोषणा करेंगे। यह बहुत श्रम साध्य एवं जटिल कार्य है। अंचलीय समितियों विशेषतः अंचल के माननीय अध्यक्षों के सहयोग के बिना यह कार्य दुष्कर होगा। अतः हम सभी माननीय अध्यक्षों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने-अपने अंचल से लेखन कार्य में सक्षम व्यक्ति का नाम मुझे पहुँचायें। हम उनसे सम्पर्क कर उनका सहयोग लेगें। हम प्रत्येक क्षेत्र से 1-1 अन्य विद्वान को भी जोड़ना चाहते हैं। अतः इच्छुक बन्धु सीधे मुझसे भी सम्पर्क कर अपनी रुचि की जानकारी देवें। प्राथमिक अनुमान के अनुसार हमें लगभग 300 तीर्थों का विवरण संकलित करना होगा। संकलित सामग्री के आधार पर खण्डों की संख्या पूर्ववत् 5 या उससे अधिक भी हो सकती है। इन खण्डों को प्रामाणिक एवं बहुरंगी प्रकाशित करने में विपुल राशि व्यय होना अनुमानित है। अतः प्रत्येक खण्ड हेतु प्रायोजकों को जोड़ना है जिससे कमेटी पर अतिरिक्त व्यय भार न पड़े।

2. प्रसिद्ध जैनाचार्य एवं मनीषी :

भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध करने में महान जैनाचार्यों का योगदान अद्वितीय है। आज जो जिनवाणी हमें उपलब्ध है वह इन जैनाचार्यों, भट्टारकों एवं मनीषी पंडितों के समर्पण का ही प्रतिफल है। गौतम स्वामी से लेकर बींसवी शताब्दीं तक के जैनाचार्यों का समेकित, संक्षिप्त किन्तु प्रामाणिक परिचय पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाना है। सम्प्रति निम्नांकित कुछ पुस्तकें उपलब्ध हैं:

तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, भाग 1-4
(डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री)
जैन साहित्य का इतिहास
(पं. कैलाशचन्द्र जैन)
वीर शासन के प्रभावक आचार्य
(डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर)
जैन धर्म का प्राचीन इतिहास
(पं. बलभद्र जैन एवं पं. परमानन्द जैन)
मिलिए जैनाचार्यों से
(मुनि प्रज्ञासागर - वर्तमान में आचार्य)
जैन दिगम्बराचार्य: प्रेरक संत एवं सद्विचार
(डॉ. आर. के. जैन, कोटा)

उक्त ग्रंथों एवं इसी प्रकार की कुछ अन्य पुस्तकों, कोशों एवं गत 5 दशकों की नवीन शोधों का उपयोग कर एक नवीन प्रामाणिक, सुगठित सन्दर्भ ग्रंथ का सृजन प्रस्तावित है। इसमें सम्मिलित किये जाने वाले लगभग 400 जैन आचार्यों / मनीषियों की प्राथमिक सूची हमने तैयार की है। इस सूची में बींसवी शताब्दीं के चारित्रचक्रवर्ती आ. शांतिसागर, आ. आदिसागर 'अंकलीकर', आ. शांतिसागर 'छाणी' आदि तीनों परम्पराओं के अनेक आचार्यों, आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी, राष्ट्रसंत आचार्य श्री

विद्यानन्द जी एवं संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी सहित 35 से अधिक समाधिस्थ आचार्य एवं व्रती भी सम्मिलित हैं। देश की सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से बींसवी सदी की आचार्य परम्परा के बारे में प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने कृति के सृजन का दायित्व तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ को दिया है। पाण्डुलिपि तैयार हो जाने पर प्रकाशन की व्यवस्था की जायेगी। सभी युवा शोधकों/ इतिहासज्ञों / विद्वानों को लेखन का अवसर प्रदान करने की दृष्टि से यह प्रस्तावित किया जाता है कि उपलब्ध कराये गये नमूनों के अनुसार कोई भी व्यक्ति एक या अधिक आचार्यों का परिचय लिख सकता है। आप jainacharya26@gmail.com पर पत्र भेजकर नमूने प्राप्त कर सकते हैं। प्राप्त परिचयों की भाषा / शैली में एकरूपता रखने की दृष्टि से 2-3 सदस्यीय सम्पादक मण्डल का गठन किया जायेगा। सम्पादित रूप में ग्रंथ में प्रकाशित सामग्री के साथ लेखक का नाम भी दिया जायेगा।

3. प्रमुख जैन राजा एवं राजवंश :

भारतवर्ष में अनेक शताब्दियों तक विभिन्न राजाओं एवं राजवंशों ने शासन किया है जिनमें अनेक जैन धर्मानुयायी रहे। उनके शासनकाल में जैन कला, स्थापत्य के विकास के साथ ही जैन मन्दिरों के निर्माण हुए।

भारत में महामेघवाहन वंश, मौर्यवंश, राष्ट्रकूट वंश, पश्चिमी गंग वंश, परमार, होयसल, कदम्ब एवं चालुक्य वंश आदि जैन धर्मानुयायी थे। सम्राट खारवेल, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, महाराजा अमोघवर्ष नृपतुंग, महाराजा सुहेलदेवराय आदि इतिहास प्रसिद्ध जैन राजा हैं। डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, डॉ. हुकुमचन्द्र जैन (कोटा) आदि इतिहासज्ञों ने जैन राजाओं एवं उनके राज्य की सीमाओं का अच्छा विवरण दिया है।

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के मार्गदर्शन में संचालित encyclopediaofjainism.com पर भी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। वरिष्ठ जैन विद्वान प्रो. भागचन्द्र जैन 'भास्कर', प्रो. प्रेम सुमन जैन आदि का मार्गदर्शन तथा अनेक युवा विद्वानों का सहयोग भी हमें उपलब्ध है। इन सबके सहयोग से हम महावीरोत्तर काल के जैन राजाओं एवं राजवंशों का पूर्ण विवरण संकलित कर पुस्तकाकार प्रकाशित करना चाहते हैं। इतिहास के अध्येता युवा विद्वानों को हम इस कार्य में समन्वय हेतु आमंत्रित करते हैं।

4. जैन गौरव :

विगत 2-3 शताब्दियों में जैन समाज के भाई-बहनों ने राष्ट्र एवं समाज निर्माण में अतुलनीय योगदान दिया है। उद्योग, व्यापार, कला, साहित्य, पत्रकारिता, विज्ञान, अनुसंधान, खेलकूद, संगीत, प्रशासन आदि सभी क्षेत्रों में जैन समाज का अग्रणी योगदान रहा है। अनेक जैन बन्धुओं को स्वातंत्रयोत्तर काल में पद्म पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है तथापि इनका व्यवस्थित संकलन अब तक नहीं हुआ है। कतिपय स्फुट प्रयास निम्नवत् है जैसे:

जैन जागरण के अग्रदूत - श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
जैन गौरव - श्री हुकुमचंद सांवला
स्वतंत्रता संग्राम में जैन - स्व. डॉ. कपूरचंद जैन
भारत के चमकते सितारे - श्रीमती इन्द्रा जैन

यह कार्य व्यापक जन सम्पर्क एवं सर्वेक्षण का है। टीम के निर्माण एवं समन्वय सामग्री के संकलन/सम्पादन का दायित्व बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी के उप पुस्तकालयाध्यक्ष **डॉ. संजीव सराफ** (94254 37356) को प्रदान किया जाता है।

5. प्राचीन पाण्डुलिपियों का प्रकाशन :

पाण्डुलिपियॉ जैन संस्कृति की अमूल्य निधि हैं। हमारे महान जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत अद्यतन अप्रकाशित ग्रंथों का अनुवाद एवं आलोचनात्मक अध्ययन सहित प्रकाशित करना इस महोत्सव की गरिमा को बढ़ायेगा। इस क्षेत्र में कार्यरत संस्थानों के सहयोग से हम कुछ नवीन ग्रंथों को प्रकाशित करना चाहते हैं। हमारी सामाजिक संस्थाओं एवं ज्ञानभारतम् मिशन (भारत सरकार) द्वारा पाण्डुलिपि संरक्षण का कार्य किया जा रहा है।

6. स्मारक ग्रंथ : 22.10.26 से 22.10.27 के एक वर्षीय महोत्सव की विस्तृत सचित्र आख्या "125 वॉ स्थापना वर्ष स्मारक ग्रंथ" के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। इसमें विगत 125 वर्षों का इतिहास दुर्लभ चित्रों सहित संकलित किया जाएगा। सभी प्रतिनिधियों से आग्रह है कि वे कार्यक्रमों की सचित्र आख्या गाजियाबाद/मुम्बई कार्यालय भिजवाये।

7. जैन तीर्थ वन्दना का विशेषांक : कमेटी का मुखपत्र 'जैन तीर्थ वन्दना' है। इसका वर्ष 16, अंक-7, अक्टूबर 2026 "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। इसमें कमेटी की उपलब्धियों, आगामी योजनाओं, पूर्व अध्यक्षों के साक्षात्कार एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के उद्गारों को सम्मिलित किया जायेगा। महोत्सव वर्ष की सभी प्रकाशन योजनाओं में आपका सहयोग / मार्गदर्शन तन-मन-धन से अपेक्षित है।

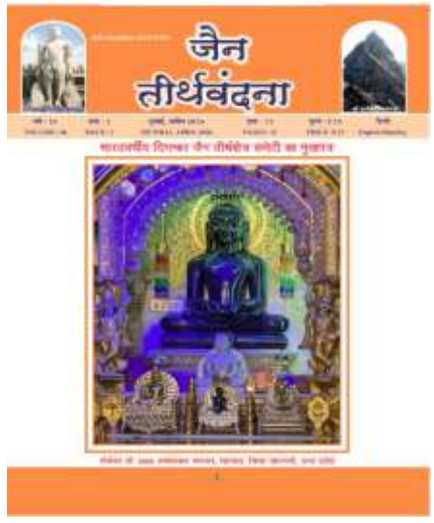

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'

परम पूज्य आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' का जन्म सन 1888 में कार्तिक बदी ग्यारस को राजस्थान प्रान्त के उदयपुर नगर के समीप स्थित छाणी ग्राम में हुआ था| आपने सन 1922 में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की तथा एक वर्ष पश्चात ही सन 1923 में भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तदनुसार 23 सितम्बर 1923 को राजस्थान के सागवाड़ा नगर में मुनि दीक्षा अंगीकार कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर आरूढ़ हुए| मुनि रूप में आपने दिगम्बर मुनि की चर्या, उनके मूलगुणों की साधना तथा उनके तपश्चर्या के विविध आयामों से जैन समाज को परिचित करवाया|

इस परंपरा के पंचम पट्टाधीश परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के प्रमुख शिष्य परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज ने पूज्य आचार्य-प्रवर के समाधि दिवस के अवसर पर उनके चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए बताया कि आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' ने उत्तर भारत में भ्रमण कर मुनि परंपरा को संरक्षित एवं व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है| यद्यपि आचार्य श्री को दीक्षोपरांत मात्र 22 वर्ष ही धर्म प्रचार हेतु मिले परन्तु जैन मुनि परंपरा में उनका योगदान अत्यंत विशिष्ट है| आपने 1923 से लेकर 1944 के मध्य लगभग समस्त उत्तर भारत में दिगम्बर जैन मुनि के रूप में सतत विहार किया|

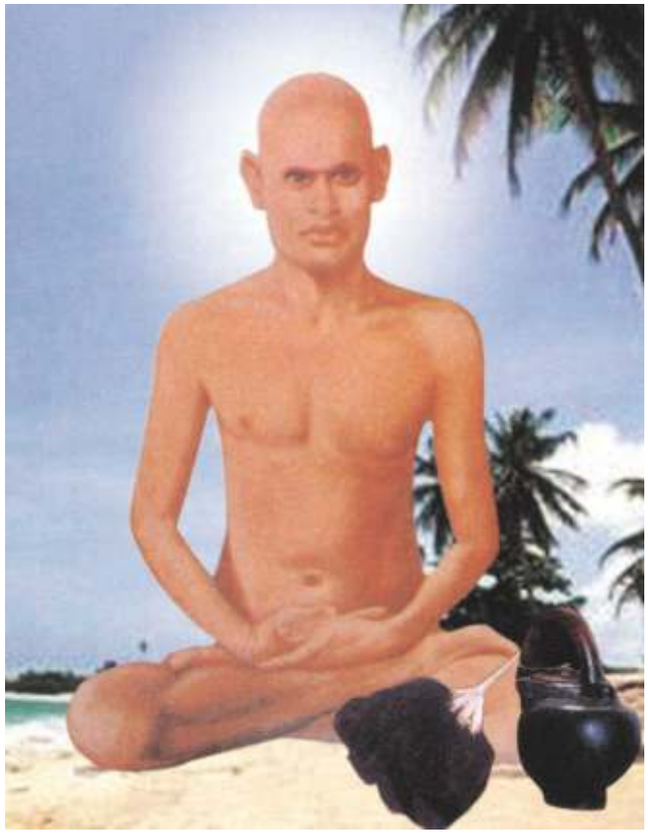

आप एक सच्चे समाज सुधारक थे तथा आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का साहसिक प्रयत्न किया| मृत्यु उपरांत छाती पीटने की प्रथा, दहेज़ प्रथा, बलि प्रथा, कन्या विक्रय प्रथा, विधवा स्त्री को काले कपड़े पहनाने की प्रथा आदि की घोर भर्त्सना की| आपके अहिंसात्मक एवं धर्ममय प्रवचनों के माध्यम से इन कुप्रथाओं पर बंदिश लगी| गिरिडीह (झारखण्ड) प्रवास के दौरान आपके संस्कारित प्रवचनों से प्रभावित होकर एवं आगमोक्त चर्या को देखकर स्थानीय समाज ने सन 1926 में आपको आचार्य पद से सुशोभित किया|

आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी', प्रथम ऐसे दिगम्बर मुनिराज थे जिन्होंने उत्तर भारत के नगरों की दूर-दूर तक पदयात्रा करके दिगम्बर साधु के विहार का मार्ग प्रशस्त किया| आपने सन 1926 में अपने संघ सहित कानपुर, लखनऊ, गोरखपुर, अयोध्या और बनारस आदि प्रमुख नगरों में धर्मप्रभावना करते हुए शाश्वत तीर्थाधिराज श्री सम्मेद शिखर जी की ओर मंगल विहार किया था| इस अभूतपूर्व यात्रा घटनाक्रम के विषय में आचार्य श्री की जीवन-परिचय पुस्तिका में उद्धृत है कि "मुनिसंघ के आगमन का समाचार सुनकर बीसपंथी कोठी के मुनीम तथा हजारीबाग के जैन श्रावक शिखरजी से हाथी लेकर मुनिसंघ की अगवानी के लिए उनके पास आये| और कहने लगे कि प्रभावना के निमित्त से हम हाथी लाये हैं क्योंकि पिछले सौ-डेढ़ सौ वर्षों के बीच अभी तक कोई मुनिराज यहाँ नहीं पधारे|

राजस्थान के ब्यावर में इस युग के दो महान आचार्य - चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज दक्षिण' एवं प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' का वर्षायोग एक साथ सानंद संपन्न हुआ| दोनों महान संतों ने समत्व की अभूतपूर्व साधना की| दोनों आचार्यों ने समता और समन्वय का पाठ पढ़ाया एवं जन-जन को संस्कारित किया| बिना किसी पंथ भेद के, बिना किसी विभाव के - सिर्फ और सिर्फ सद्भाव| आपके धर्मप्रेरक उपदेशों से प्रभावित होकर समाज ने अनेक विद्यालय, धर्मपाठशालायें, वाचनालय, साधना आश्रम तथा साहित्य प्रकाशक संस्थाओं की स्थापना की

सन 1944 में ज्येष्ठ बदी दशमी तदनुसार दिनांक 17 मई 1944 को राजस्थान के सागवाड़ा नगर में समाधिपूर्वक मरण कर इस नश्वर देह का त्याग किया| पूज्य आचार्य श्री का जितना विशाल एवं अगाध व्यक्तित्व था, उनका कृतित्व उससे भी अधिक विशाल था| आचार्य श्री के कर-कमलों द्वारा अनेक भव्य जीवों ने जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार कर अपना जीवन धन्य किया| इस गौरवशाली महान परम्परा में वर्तमान में सहस्त्राधिक दिगम्बर साधु समस्त भारतवर्ष में धर्मप्रभावना कर रहे हैं तथा भगवान महावीर के संदेशों को जनमानस तक पहुंचा रहे हैं|

संकलन - समीर जैन (दिल्ली)

मतभेद से मनभेद तक: जैन संस्थाओं के सामने गंभीर चुनौती

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

मानव समाज विचारों की विविधता से निर्मित है। जहाँ अनेक व्यक्ति होंगे, वहाँ अनेक मत होंगे। यह स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी। भिन्न विचार ही विकास के मार्ग खोलते हैं, नई योजनाओं को जन्म देते हैं और संगठन को जीवंत बनाए रखते हैं। परंतु जब मतभेद मनभेद में बदल जाते हैं, तब वही संगठन दुर्बल होने लगता है।

मतभेद स्वाभाविक हैं, मनभेद विनाशकारी। मतभेद विचारों का अंतर है, जबकि मनभेद हृदयों की दूरी है। मतभेद में संवाद जीवित रहता है, पर मनभेद में मौन, कटुता और दूरी घर कर जाती है। मतभेद व्यक्ति को सोचने पर विवश करते हैं, पर मनभेद संबंधों को तोड़ने लगते हैं।

आज समाज, परिवार, संगठन और मित्रता—हर क्षेत्र में यह समस्या बढ़ती दिखाई देती है। छोटी-सी असहमति बड़े विवाद का कारण बन जाती है। लोग विचारों पर चर्चा कम और व्यक्तियों पर आक्रमण अधिक करने लगे हैं। तर्क का स्थान कटाक्ष ने ले लिया है, संवाद का स्थान आरोपों ने और सहमति की संभावना का स्थान अहंकार ने। यही कारण है कि जहाँ प्रेम होना चाहिए वहाँ तनाव है, जहाँ अपनापन होना चाहिए वहाँ दूरी है।

वास्तव में मतभेद तो ज्ञान के द्वार खोलते हैं। यदि सब एक ही प्रकार सोचें, तो नई दिशा कैसे मिले? नए विचार कैसे जन्म लें? मतभेद हमें सिखाते हैं कि सत्य एकांगी नहीं, बहुआयामी होता है। दूसरों की बात सुनना, उनकी दृष्टि समझना और अपनी सीमाओं को पहचानना—यह सब मतभेदों से ही संभव होता है।

किन्तु जब मतभेद के साथ अहंकार जुड़ जाता है, तब मनभेद जन्म लेते हैं। मनुष्य विचार से अधिक स्वयं को सही सिद्ध करने में लग जाता है। वह सामने वाले की बात सुनना नहीं चाहता, केवल अपनी बात मनवाना चाहता है। यहीं से संबंधों की दीवारों में दरारें पड़ने लगती हैं।

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि विचार बदल सकते हैं, पर रिश्ते टूट जाएँ तो उन्हें जोड़ना कठिन होता है। किसी विषय पर असहमति हो सकती है, पर किसी व्यक्ति से घृणा क्यों? कोई हमारे मत से सहमत न हो, तो भी वह सम्मान का अधिकारी है। सभ्यता का अर्थ यही है कि हम असहमति में भी आदर बनाए रखें।

आज आवश्यकता है सहिष्णुता की, सुनने की कला की और विनम्रता की। यदि हम हर मतभेद को युद्ध न मानें, बल्कि सीखने का अवसर मानें, तो अनेक मनभेद स्वतः समाप्त हो जाएँगे। हमें यह सीखना होगा कि "मैं सही हो सकता हूँ, पर दूसरा भी पूर्णतः गलत नहीं हो सकता।"

आज यह चिंता विशेष रूप से अनेक जैन संस्थाओं में दिखाई देने लगी है। जैन समाज त्याग, संयम, अहिंसा, अनेकांत और समन्वय की महान परंपरा का वाहक है। जिस दर्शन ने संसार को अनेकांतवाद का संदेश दिया, जहाँ सत्य को बहुआयामी माना गया, जहाँ विरोध नहीं बल्कि समन्वय को महत्व दिया गया—यदि उसी समाज की संस्थाओं में कटुता, गुटबंदी और परस्पर द्वेष बढ़ने लगे, तो यह आत्ममंथन का विषय है।

आज देखने में आता है कि अनेक जैन संस्थाओं में छोटे-छोटे विषय बड़े विवादों का रूप ले लेते हैं। पदों की प्रतिस्पर्धा, निर्णयों पर असहमति, व्यक्तिगत आग्रह, मान-सम्मान की अपेक्षा, पीढ़ियों के बीच संवादहीनता, और कभी-कभी स्वार्थपूर्ण प्रवृत्तियाँ—ये सब मतभेदों को मनभेद में बदल देती हैं। परिणाम यह होता है कि संस्था का समय समाजसेवा में कम और आंतरिक संघर्षों में अधिक व्यतीत होने लगता है।

जब किसी संस्था में मतभेद बढ़ते हैं, तो सबसे पहले उसकी ऊर्जा नष्ट होती है। जो शक्ति धर्मप्रभावना, शिक्षा, संस्कार, सेवा, तीर्थ संरक्षण, युवाओं के मार्गदर्शन और समाज उत्थान में लगनी चाहिए, वही शक्ति आरोप-प्रत्यारोप में खर्च होने लगती है। नई पीढ़ी ऐसे वातावरण को देखकर संस्थाओं से दूर होने लगती है। समाज के सामान्य सदस्य भी निराश हो जाते हैं।

यह स्मरण रखना चाहिए कि मतभेद होना दोष नहीं है। विचार अलग होना संगठन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। किसी योजना पर भिन्न मत हो सकते हैं, कार्यपद्धति पर अलग दृष्टिकोण हो सकता है, नेतृत्व शैली पर प्रश्न उठ सकते हैं—परंतु इन सबका समाधान संवाद से होना चाहिए, संघर्ष से नहीं। मतभेद यदि मर्यादा में रहें तो संस्था को मजबूत करते हैं, क्योंकि वे नए विचार लाते हैं। लेकिन मनभेद संस्था को भीतर से खोखला कर देते हैं।

जैन दर्शन का अनेकांतवाद हमें सिखाता है कि सत्य केवल हमारे पास नहीं है। सामने वाले के विचार में भी सत्य का अंश हो सकता है। यदि इस सिद्धांत को संस्थागत जीवन में उतार लिया जाए, तो अधिकांश विवाद समाप्त हो सकते हैं। स्याद्वाद हमें संयमित भाषा सिखाता है, और अहिंसा केवल कर्म से नहीं, वचन और विचार से भी अपेक्षित है। कटु शब्द भी हिंसा हैं, अपमान भी हिंसा है, और द्वेष भी हिंसा है। संस्था पर अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व होना चाहिए। वर्चस्व नहीं, सहभागिता होनी चाहिए।

राजनीतिक जीवन में भी हम अक्सर देखते हैं कि अनेक नेता मंचों पर एक-दूसरे की तीखी आलोचना करते हैं, आरोप लगाते हैं, कटु शब्द भी बोलते हैं। चुनावी सभाओं में वे प्रतिद्वंद्वी दिखाई देते हैं, परंतु व्यवहारिक जीवन में अनेक अवसरों पर वही नेता एक साथ बैठकर चर्चा करते, भोजन करते, सुख-दुःख में सहभागी होते और औपचारिक संबंध निभाते दिखाई देते हैं। वे समझते हैं कि वैचारिक विरोध और व्यक्तिगत संबंध दो अलग विषय हैं। यदि राजनीति में यह परिपक्वता संभव है, तो धर्म और समाज की संस्थाओं में तो यह और अधिक दिखाई देनी चाहिए।

आज आवश्यकता है कि जैन संस्थाएँ कुछ मूल सूत्र अपनाएँ—

- ☐ निर्णय प्रक्रिया पारदर्शी हो।
- ☐ वरिष्ठों का अनुभव और युवाओं की ऊर्जा साथ चले।
- ☐ पद सेवा का माध्यम बने, प्रतिष्ठा का साधन नहीं।
- ☐ असहमति को सम्मानपूर्वक सुना जाए।
- ● आलोचना के स्थान पर रचनात्मक सुझाव की परंपरा विकसित हो।

☐व्यक्तिगत अहंकार से ऊपर उठकर सामूहिक हित को प्राथमिकता दी जाए।

☐यह भी आवश्यक है कि संस्थाओं में समय-समय पर संवाद सभाएँ हों, जहाँ बिना कटुता के खुलकर विचार रखे जा सकें। यदि लोग सुने जाएँगे, तो वे टूटेंगे नहीं। यदि सम्मान मिलेगा, तो विद्रोह नहीं होगा। यदि अपनापन रहेगा, तो मतभेद भी मधुर रहेंगे।

जैन समाज का इतिहास त्यागी आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं, विद्वानों और श्रावकों की महान परंपरा से प्रकाशित है। जिन्होंने अपना जीवन समाज और धर्म के लिए समर्पित किया, उनकी विरासत को हम आपसी कलह से दुर्बल न करें। संस्थाएँ व्यक्तियों से बड़ी होती हैं, और समाज संस्था से भी बड़ा।

अतः समय की पुकार है—मतभेद रहें, क्योंकि वे विचारों को जन्म देते हैं; पर मनभेद न हों, क्योंकि वे संगठन को तोड़ देते हैं।

जैन संस्थाएँ यदि अपने मूल सिद्धांत—अहिंसा, अनेकांत, क्षमा और समन्वय—को व्यवहार में उतार लें, तो वे पुनः समाज की प्रेरणाशक्ति बन सकती हैं।

आइए संकल्प लें—

हम पद से नहीं, उद्देश्य से जुड़ेंगे।
हम व्यक्तियों से नहीं, मूल्यों से चलेंगे।
हम मतभेद रखेंगे, पर मनभेद नहीं होने देंगे।

अहिंसा वॉक की पहल से रामनाथपुरम में 1000 वर्ष प्राचीन भगवान महावीर प्रतिमा का अनावरण

तमिलनाडु के रामनाथपुरम ज़िले के मुदुकुलत्तूर क्षेत्र के समीप स्थित मेलत्थूवल ग्राम में लगभग 1000 वर्ष प्राचीन भगवान महावीर की एक दुर्लभ एवं प्राचीन प्रतिमा का अनावरण हुआ है। यह खोज दक्षिण भारत में जैन धर्म के व्यापक प्रसार और समृद्ध विरासत का महत्वपूर्ण प्रमाण मानी जा रही है।

काले पत्थर से निर्मित यह प्रतिमा लगभग 3 फीट ऊँची एवं 2 फीट चौड़ी है। इसमें भगवान महावीर कमलासन पर मकर अलंकरणयुक्त सिंहासन पर अर्ध-पर्यंक मुद्रा में विराजमान हैं। उनके ऊपर अशोक वृक्ष दर्शाया गया है, जो आध्यात्मिक शांति एवं ज्ञान का प्रतीक है। प्रतिमा के शीर्ष पर त्रि-छत्र निर्मित हैं तथा पीछे प्रभामंडल अंकित है। दोनों ओर चंवरधारी सेवकों की सुंदर आकृतियाँ भी उकेरी गई हैं। शैली के आधार पर इसे 11वीं शताब्दी का माना जा रहा है।

इस प्रतिमा के अस्तित्व की प्रारंभिक जानकारी स्थानीय पुलिसकर्मी वेलमुरुगन द्वारा सामने आई, जिसके बाद चेन्नई के "अहिंसा वॉक" समूह से जुड़े जैन समुदाय के सदस्यों ने स्थानीय निवासी करुप्पन्नन एवं ग्रामवासियों के सहयोग से प्रतिमा की सुरक्षा हेतु एक साधारण संरचना का निर्माण कराया, जिससे इस ऐतिहासिक धरोहर का संरक्षण सुनिश्चित हो सका।

रामनाथपुरम पुरातत्व अनुसंधान संस्थान के अध्यक्ष श्री वी. राजगुरु ने स्थल का निरीक्षण करते हुए बताया कि यह क्षेत्र प्राचीन काल में जैन धर्म एवं व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है। मदुरै और केरल को जोड़ने वाले प्राचीन व्यापार मार्गों तथा पूर्वी तट के गाँवों में पूर्व में भी जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ एवं अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र के समृद्ध ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार जैन मंदिर एवं उपासना स्थल प्रायः उन स्थानों पर स्थापित किए जाते थे, जहाँ जैन व्यापारी व्यापार मार्गों के समीप निवास करते थे, जिससे मेलत्थूवल का यह स्थल भी एक प्राचीन जैन केंद्र होने की संभावना को बल मिलता है।

ग्राम क्षेत्र में लगभग 20 एकड़ भूमि पर लौह युग से संबंधित काले एवं लाल मिट्टी के बर्तनों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं, जिन्हें लगभग 2000 वर्ष पुराना माना जा रहा है। यह इस क्षेत्र में प्राचीन मानव बसावट का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है।

हाल ही में आयोजित कुम्भाभिषेक (शिखर प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण) के दौरान आंशिक रूप से मिट्टी में दबे इस महावीर प्रतिमा की विधिवत पूजा-अर्चना की गई। इस अवसर पर "अहिंसा वॉक" के अध्यक्ष प्रोफेसर कनक अजित दास, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री पोन राजेन्द्र प्रसाद सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

यह खोज न केवल पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि जैन संस्कृति, अहिंसा के सिद्धांत और भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की समृद्ध विरासत को भी उजागर करती है। अहिंसा वाक को भारतवर्ष के प्रमुख समाजसेवी व तमिलनाडु के जैन तीर्थो के जीर्णोधार कर्ता श्री एम के जैन चेन्नई का सहयोग निरंतर प्राप्त होता हैं।

इस संबंध में जानकारी अरिहंत गिरि के श्री बसंत शास्त्री द्वारा दी गई।

- राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

जैन धर्म या जाति ? जनगणना में अनसुलझे प्रश्न ?

भारत में वर्तमान में अब जातिगत जनगणना भी होनी है। लगभग सभी जगह जैन धर्मानुयायियों को जाति के कॉलम में भी 'जैन' ही लिखने के निर्देश जारी हो रहे हैं – जो मुझे समझ में नहीं आ रहा है,कोई इस विषय को मुझे समझा सके तो बहुत कृपा होगी , क्यों कि मुझे ऐसा लगता है कहीं हम ऐसा करके जैन बढ़ाने की जगह सिमटा न दें। इस संशय पर जबाब यह आता है कि पूरे समाज को शासन की दृष्टि में एक संख्याबल के रूप में बताने हेतु ऐसा किया जा रहा है। अन्यथा जैन हिन्दुओं की उपजातियों में गिन लिए जाएंगे।

लेकिन वे ऐसे कैसे हिन्दू की उपजाति में गिन लिए जाएंगे ? जब धर्म के कॉलम में जैन लिख रहे हैं तो धार्मिक संख्या तो वहां से काउंट होगी न । और जाति के कॉलम में अपनी जाति क्षत्रिय,वणिक आदि ,या अन्य उपजाति लिखेंगे तो वो जैन धर्म की जाति मानी जाएगी कि हिन्दू धर्म की ? मेरा स्पष्ट मानना है कि जैन एक धर्म है उसे जाति बताएंगे तो समस्या होगी।

मुझे समझाइये हिंदू एक धर्म है ,जाति में कोई हिन्दू लिखेगा ? ईसाई एक धर्म है ,जाति में कोई ईसाई लिखेगा ? सिक्ख एक धर्म है ,जाति में कोई सिक्ख लिखेगा ? इस्लाम एक धर्म है ,जाति में कोई इस्लाम लिखेगा ?

कई प्रदेशों में जैन धर्म को मानने वाली जातियां कसार,सराक आदि अनेक जातियाँ हैं जिन्हें ओबीसी का दर्जा भी प्राप्त है। उनका क्या होगा ? फिर कोई किसी भी जाति का व्यक्ति कभी खुद को जैन धर्म का अनुयायी नहीं कह पाएगा ,क्यों कि उसकी जाति भी जैन हो जाएगी ? और वह सवर्ण कहलायेगा । धर्म बदला जा सकता है जाति नहीं । जाति है – ब्राह्मण,क्षत्रिय,बनिया,शूद्र आदि ,इसी प्रकार अनेक जातियां स्थानीय स्तर पर, परंपरागत रूप से ,गोत्र, परिवार और गांव के नाम से बनी हैं। वे भिन्न हैं। जैन धर्म के अनुयायियों की अधिकांश जातियां क्षत्रिय हैं। वैसे भी अन्य लगभग हर जगह जाति के कॉलम में बस यही पूछा जाता है - GEN/SC/ST/OBC । संभवतः जनगणना भी यही कॉलम हों। क्यों कि जाति का नाम पूछने लग जाएंगे तो वो हिसाब ही नहीं रख पाएंगे।

मुझे भय है कहीं इस शासन को दिखाने के चक्कर में हम अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी न मार लें। इससे सबसे बड़ा नुकसान यह हो सकता है कि कभी कोई नया व्यक्ति जैन धर्म नहीं अपनाएगा क्यों कि वह जैन जाति से नहीं होगा, और मूल परंपरा की दृष्टि से यह जैन धर्म के विरुद्ध है । जहाँ तक जनसँख्या वृद्धि की बात है तो मात्र ज्यादा बच्चे पैदा करने से कभी जैनों की जनसँख्या में इजाफ़ा नहीं हो सकता और इतिहास में आज तक कभी किसी धर्म की जनसँख्या मात्र इस आधार पर नहीं बढ़ी है,धर्म के प्रभाव में स्वतः अथवा जबरजस्ती पूरी की पूरी समाज ,जातियों ने वो धर्म स्वीकार किये हैं तभी उस धर्म की जनसँख्या बढ़ी है ,फिर चाहे बौद्ध हों ,ईसाई अथवा मुस्लिम।

इस पर यह कहना कि नए वो वैसे भी नहीं आ रहे हैं, विगत 50 वर्षों में मेरे संज्ञान में कोई नहीं आया। शायद कुछ आए हों पर संख्या नगण्य है। तो क्या भविष्य की संभावना भी खत्म कर दें ,ताकि कोई आए न और जो हैं वो तो खत्म हो ही रहे हैं। ऐसे तो जनसंख्या उल्टी कम हो जाएगी।

अगर मैं अपनी जाति में क्षत्रिय लिखूं तो क्या समस्या है ? धर्म तो जैन ही माना जाएगा,अल्पसंख्यक भी धर्म के आधार पर होता है, जाति के आधार पर नहीं। शासन तो बनता बिगड़ता रहता है। उनके मापदंड भी बदलते रहते हैं। धर्म शाश्वत है। यदि जैन समाज खुद ही धर्म को जाति घोषित करेगा तो 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः'- ऐसा मेरा मानना है। एक बार सभी गंभीरता से विचार करें कि क्या सही है ? मेरा कोई आग्रह नहीं है , लेकिन इसके दूरगामी परिणामों पर अवश्य विचार करना चाहिए।

कई बार सामाजिक मुद्दों पर जैन धर्म के मानने वालों का एक समूह एक जैन समाज कहलाता है और वे एक विशेष जाति के होते हैं तो वे अपनी जाति को ही व्यवहार से जैन कहने लग जाते हैं ,इसीलिए ये भ्रम खड़े होते हैं,यहाँ तक भी होता है कि कोई अन्य जाति का व्यक्ति जैन धर्म का कितना भी कठोर पालन करे, ये उसे रोटी – बेटी के सम्बन्ध के साथ नहीं अपनाते हैं , तो ये उनकी अपनी जाति की सामाजिक व्यवस्था है न कि जैनधर्म की। प्रत्येक जाति और गोत्र में शादी विवाह ,खान-पान के अपने निजी उसूल होते हैं जिनका पालन करने के लिए वे स्वतंत्र हैं । कई जैन धर्मावलम्बी भी ऐसे हैं जो अपनी ही उपजाति में विवाह आदि करना उचित मानते हैं ,यद्यपि युग और वातावरण के अनुसार उनमें से कुछ के विचार परिवर्तित भी हुए हैं किन्तु हमें उनसे यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि इन कारणों से वे अपने निजी उसूलों की बलि चढ़ाएं। फिलहाल 'जैन लोगों को धर्म के साथ साथ 'जाति' में भी जैन ही लिखना चाहिए' - ऐसा फ़रमान मुझे आत्मघातक लग रहा है ,जैन को जाति में समेटने का प्रयास या इस तरह की नई संकल्पना करेंगे तो और अधिक अल्पसंख्यक हो जायेंगे । यह मेरा निवेदन है,इसे विरोध के रूप में न देखा जाय । मेरी स्पष्ट मान्यता है कि जैन एक धर्म है जिसमें अनेक जातियां होती हैं ,जैसे हिन्दू या सिक्ख एक धर्म है और उसमें अनेक जातियां हैं।

जैन धर्म या जाति ? आगम दृष्टि :

सामान्यतः लोग 'जैन' को जातिवाचक संज्ञा समझ लेते हैं और वर्तमान में मात्र जैन समाज के लोगों को ही जैनधर्म का अनुयायी मान लेते हैं । किन्तु वस्तुतः 'जैन' एक धर्म है, जाति नहीं। इसका मूलतः किसी निश्चित जाति से कोई सम्बन्ध नहीं है। किसी भी जाति का मानव जैनधर्म का पालन कर सकता है। प्राचीनकाल में ऐसा अधिकतर होता रहा है। किन्तु अब तक के इतिहास में कभी किसी को जबरन जैन धर्मानुयायी नहीं बनाया गया और न इस तरह के विश्वास को पनपने दिया गया। यहाँ जाति से तात्पर्य मात्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र से नहीं है। बल्कि मनुष्यों के अलावा पशुओं से

भी है। तीर्थंकरों के समवशरण (धर्म उपदेश सभा) में उनके सर्वकल्याणकारी प्रवचन सुनने सभी जाति के मनुष्य तो आते ही थे; यहाँ तक कि पशु-पक्षियों के बैठने की भी व्यवस्था थी।

भगवान् महावीर पूर्वजन्म में सिंह थे। चारणऋद्धिधारी दो मुनियों ने आकाश मार्ग से गमन करते समय आकाश से नीचे उतर कर सिंह को सम्बोधन दिया था और सिंह को सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो गयी थी। अतः सभी संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव जैनधर्म को अपना सकते हैं तथा उसका पालन कर सकते हैं।

इसी प्रकार मनुष्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सभी जैनधर्म का पालन कर सकते हैं। प्राचीन परम्परा का इतिहास भी इसका गवाह है।

जैनधर्म के सभी तीर्थंकर क्षत्रिय जाति के थे। भगवान् महावीर के प्रमुख शिष्य गौतम तथा अन्य दस गणधर ब्राह्मण जाति के थे। इन्हीं गौतम गणधर आदि ने भी दिगम्बर मुनि दीक्षा लेकर केवलज्ञान प्राप्त किया था और मोक्षगामी बने।

जैनधर्म के अनुसार संसार के सभी जीवों की सभी आत्मायें समान हैं तथा प्रत्येक आत्मा स्वपुरुषार्थ द्वारा आत्म विकास करता हुआ भक्त से भगवान् परमात्मा बनकर परमपद पा सकता है। इस प्रकार इस संसार में सभी लोग चाहे वे किसी भी जाति के हों जैनधर्म का पालन कर सकते हैं। जो लोग जैनधर्म को मात्र वैश्यों का धर्म मानते हैं या बतलाते हैं, वे वास्तव में अपनी अल्पज्ञता का ही परिचय देते हैं। वास्तव में तो जैनधर्म जन-जन का धर्म है।

दसवीं सदी के आचार्य श्री सोमदेव सूरि ने अपने नीतिवाक्यामृत ग्रंथ में कहा है कि आसन-बर्तन इत्यादि जिसके शुद्ध हों, मांस-मदिरा आदि के त्याग से जिसका आचरण पवित्र हो और नित्य स्नान आदि के करने से जिसका शरीर शुद्ध हो, ऐसा शूद्र भी ब्राह्मणादिक के समान श्रावक धर्म का पालन करने के योग्य है -

'आचारानवद्यत्वं शुचिरुपस्कारः शरीरशुद्धिश्च करोति शूद्रानपि देवद्विजतपस्विपरिकर्मसु योग्यान् ।" (7/12)

भट्टारक सोमसेन के त्रैवर्णिकाचार में इसी सन्दर्भ में कहा गया है कि आचार शुद्धि पूर्वक जैन धर्म का पालन करने में ये चारों वर्ण भाई-भाई के समान हैं। इस श्लोक को यहाँ उद्धृत करके मैं अपनी इस चर्चा को यहीं सीमित करता हूँ

विप्रक्षत्रियविट्शूद्राः प्रोक्ताः क्रियाविशेषतः ।
जैनधर्मे पराः शक्तास्ते सर्वे बान्धवोपमाः।। (7/142)

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि जैन धर्म में मूलतः जातिवाद का कोई स्थान नहीं है। यह एक विश्वबंधुत्व की भावना से युक्त समतावादी,सर्वकल्याणकारी आध्यात्मिक धर्म है तथा वे सभी लोग जो स्वयं को शुद्ध आचार-विचार पूर्वक सच्चे सुख के मार्ग पर लगाना चाहते हैं, वे सभी जैनधर्म का पालन कर जैन धर्मानुयायी बन सकते हैं। उन्हें अपनी जाति को लेकर चिन्तित होने की जरूरत नहीं है।

सिद्धान्ताचार्य पंडित फूलचंद शास्त्री जी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'वर्ण जाति और धर्म'(पृष्ठ 29-30) में स्पष्ट लिखते हैं कि धर्म में जाति और कुल को स्थान नहीं है,उन्होंने स्पष्ट किया है कि -

'मनुष्य जाति में चाण्डाल से निष्कृष्ट कर्म अन्य किसी जाति का नहीं होगा। इस कर्म को करने वाला व्यक्ति भी जब सम्यग्दर्शन जैसे लोकोतर धर्म का अधिकारी हो सकता है तब अन्य को इसके अधिकारी न मानने की चर्चा करना कैसे सम्भव हो सकता है ? वास्तव में जैनधर्म में ज्ञान की विपुलता , लौकिक पूजा-प्रतिष्ठा, इक्ष्वाकु आदि कुल, ब्राह्मण आदि जाति, शारीरिक बल, धनादि सम्पत्ति, तप और शरीर इनका महत्व नहीं है। इस धर्म में दीक्षित होने वाला तो ज्ञानादि जन्य आठ मदों को त्याग कर ही उसकी दीक्षा का अधिकारी होता है। इतना सब होते हुए भी जो जाति, रूप, कुल, ऐश्वर्य, शील, शान, तप और बल का अहङ्कार कर दूसरे धर्मात्माओं का अनादर करता है वह अपने धर्म का ही अनादर करता है।(रत्नकरण्ड० श्लोक० २६) उसके नीच गोत्रकर्म का बन्ध होता है। (अनगारधर्मामृत अ० श्लोक ८८ की टीकामें उद्धत)जाति और कुल का तो अहङ्कार इसलिए भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये काल्पनिक है। लोक में जन्म के बाद प्रत्येक व्यक्ति के नाम रखने की परिपाटी है। इससे विवक्षित अर्थ का बोध होने में बड़ी सहायता मिलती है। चार निक्षेपों में नाम निक्षेप मानने का यही कारण है। किन्तु इतने मात्र से नाम को वास्तविक नहीं माना जा सकता, क्योंकि जिस प्रकार माता के उदर से शरीर की उत्पत्ति होती है उस प्रकार उसके उदर से नाम की उत्पत्ति नहीं होती। यह तो उसके पृथक् अस्तित्व का बोध कराने के लिए माता पिता आदि बन्धु वर्ग के द्वारा रखा गया संकेत मात्र है। जाति और कुल के अस्तित्व की लगभग यही स्थिति है। ब्राह्मण आदि जाति और इक्ष्वाकु आदि कुल न तो जीव रूप हैं, न शरीर रूप ही और न दोनों रूप ही। वास्तव में ये तो प्रयोजन विशेष से रखे गये संकेत मात्र हैं, अतः धर्म के धारण करने में न तो ये बाधक है और न साधक ही। हाँ यदि इनका अहङ्कार किया जाता है तो अवश्य ही इनका अहङ्कार करने वाला मनुष्य धर्मधारण करने का पात्र नहीं होता, क्योंकि जाति का सम्बन्ध आत्मा से न होकर शरीर (आजीविका) से है और शरीर भव का मूल कारण है, इसलिए जो धर्माचरण करते हुए जाति का आग्रह करते हैं वे संसारसे मुक्त नहीं होते। (समाधितन्त्र श्लो० ८८)धर्म आत्माका स्वभाव है। उसका सम्बन्ध जाति और कुलसे नहीं है।'

उन्होंने इसी पुस्तक के पृष्ठ 50 पर उल्लेख किया है -

जैन धर्म प्राणी मात्र का धर्म है और वह वर्णाश्रम धर्मसे भिन्न है। इसी भावको व्यक्त करते हुए आचार्य पूज्यपाद समाधितन्त्रमें कहते हैं-

जातिर्देहाश्रिता दृष्टा देह एव आत्मनो भवः ।
न मुच्यन्ते भवात्तस्मात्ते ये जातिकृताग्रहाः ॥८८॥
जाति-लिङ्गविकल्पेन येषां च समयाग्रहः ।
तेऽपि न प्राप्नुवन्त्येव परमं पदमात्मनः ॥८६॥

जाति देह के आश्रय से देखी जाती है और आत्मा का संसार एक मात्र यह देह है, इसलिए जो जातिकृत आग्रह से युक्त हैं वे संसारसे मुक्त नहीं होते ॥८८॥ ब्राह्मण आदि जाति और जटाधारण आदि लिङ्ग के विकल्प से जिनका धर्म में आग्रह है वे भी आत्मा के परम पद को प्राप्त नहीं होते ॥८६॥

जैनधर्म किसी जाति विशेष का धर्म नहीं है। उसका दरवाजा सबके लिए समान रूप से खुला हुआ है। श्रावकधर्म दोहा के कर्ता ने श्रावकधर्म का उपसंहार करते हुए इस सत्य को बड़े ही मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है।वे कहते हैं-

एहु धम्मु जो आयरइ बंभणु सुदु वि कोइ।
सो सावउ किं सावयहं अण्णु कि सिरि मणि होइ ॥७६॥

ब्राह्मण हो चाहे शूद्र, जो कोई इस धर्म का आचरण करता है वही श्रावक है। और क्या श्रावक के सिर पर कोई मणि रहता है?

जाति का अर्थ –

जाति का अर्थ शरीर से होता है और जन्म से उसका सम्बन्ध होता है ,जैसे हिन्दू एक धर्म है उसमें अनेक जातियां हैं सवर्ण भी हैं , पिछड़े ,अन्य पिछड़ा वर्ग ,अति पिछड़े ,जनजाति,आदिवासी आदि सभी हैं ,लेकिन उन सभी का धर्म हिन्दू है ,इसी तरह सिक्ख धर्म और बुद्ध धर्म वाले भी हैं ,इन धर्मों के अंतर्गत अनेक प्रकार की जातियां आ जाती हैं ।इसी तरह जैन भी एक धर्म है – उसके अंतर्गत कई जातियां और समुदाय आ जाते हैं , रूढ़ी से यह प्रसिद्ध हो गया कि वणिक ही जैन होते हैं , लेकिन यह बात सही इसलिए नहीं है क्यों कि अनेक वणिक जैन नहीं हैं और सभी जैन वणिक नहीं हैं । वर्तमान में जैन धर्म के अनुयायियों की अधिकांश जातियां क्षत्रिय हैं । सराक एक जाति है , कसार एक जाति है जो जैन धर्मावलम्बी हैं किन्तु वे वणिक और सवर्ण नहीं हैं। इनमें अनेक आदिवासी और पिछड़े वर्ग के हैं । जाति के कॉलम में जैन लिखने से जैन सिर्फ एक निश्चित जाति में सीमित हो जायेंगे तथा संख्या और कम आएगी – ऐसा मेरा अनुमान है। जब जैन नाम की कोई जाति है ही नहीं तो फिर यह भ्रम क्यों खड़े किये जा रहे हैं? ऐसा न हो कल को यह अज्ञानता हमें ही भारी पड़ जाये । धार्मिक और सैद्धांतिक दृष्टि से तो दो ही जातियां हैं १. मनुष्य २. तिर्यंच, सामाजिक दृष्टि से वर्ण को भी जाति के रूप में देखा जाता है, वे मुख्य चार हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वणिक और शूद्र । सरकारी दृष्टि से किसी भी फार्म आदि में जाति होती हैं – सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अति पिछड़ा वर्ग,अनुसूचित जाति,अनुसूचित जनजाति आदि । इसमें ही जैन धर्मावलम्बी अपनी निजी जातियां तय करके बता दें कि वे क्या हैं ? और वे कुछ भी हो सकते हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि कोई ब्राह्मण जाति का व्यक्ति यह कह सकता है कि मैं जैन धर्म का अनुसरण करता हूँ अतः मैं जैन हूँ , धर्म तो धारण करने का नाम है न ।

जैन हिन्दू हैं या नहीं हैं ?

एक उलझन यह भी बनी रहती है कि जैन हिन्दू हैं या नहीं हैं ? इस प्रश्न का उत्तर मैं जैन सिद्धांत स्याद्वाद के माध्यम से देना उचित समझता हूँ , भावुकता और आग्रह छोड़कर थोड़ा धैर्य से इस बात को समझियेगा । "हिन्दू" शब्द की परिभाषा समय, संदर्भ और दृष्टिकोण के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों में समझी और समझाई गई है। पहले हिन्दू शब्द मुख्यतः तीन अर्थों में प्रचलित था एक हिन्दू भूगोल ,दूसरा हिन्दू संस्कृति और तीसरा हिन्दू धर्म। पहले हिन्दू शब्द मूलतः धार्मिक नहीं, बल्कि भौगोलिक पहचान के रूप में प्रयोग हुआ था। प्राचीन फ़ारसी भाषा में 'स' का उच्चारण 'ह' हो जाता था, जैसे वे सप्त को हफ्त बोलते थे और सप्ताह को हफ्ता बोलते थे, सिन्धु नदी के सिन्धु शब्द से हिन्दू शब्द बना है । 'स' को 'ह' का उच्चारण करने वालों ने ऐसा किया था। सिन्धु नदी के पार रहने वालों को फ़ारसी लोग 'हिन्दु' कहने लगे। ग्रीक लेखकों ने इसे Indus / India कहा। अतः प्रारम्भ में "हिन्दू" का अर्थ था - सिन्धु नदी के इस पार रहने वाला व्यक्ति। चूँकि जैन धर्म के अनुयायी मूलतः यहीं के थे अतः इस दृष्टि से वे हिन्दू ही कहे जायेंगे।

अतः हिन्दू शब्द एक सम्पूर्ण सभ्यता और एक सम्पूर्ण संस्कृति का सूचक है जिसके आधार पर अपने भारत देश का 'हिन्दुस्तान' नाम भी पड़ा और भाषा का नाम भी 'हिन्दी' आया । सांस्कृतिक रूप से हिन्दू वह है जो कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास करता हो,धर्म (कर्तव्य) को जीवन का आधार मानता हो,विविधता में एकता को स्वीकार करता हो,सहिष्णुता और अहिंसा को मूल्य मानता हो,हिंसा न करता हो और इस आधार पर इस हिन्द देश की सभी मूल सभ्यतायें हिन्दु ही हैं। जैनधर्म इसी हिन्द देश का मूल धर्म रहा है; इसके अनुयायियों ने इसी संस्कृति को हमेशा संरक्षण दिया, पालन किया और बढ़ाया। इसी संस्कृति का नाम हिन्दू संस्कृति पड़ गया। अतः इस दृष्टि से निश्चित रूप से जैन संस्कृति हिन्दू संस्कृति ही है।

अब प्रश्न है हिन्दू धर्म का। भारत में प्राचीन काल से दो धारायें एक साथ बह रही हैं- श्रमण और वैदिक। पहले श्रमण धारा में सिर्फ जैन ही आते थे बाद में बौद्ध धर्म को भी श्रमणों में सम्मिलित मान लिया गया। बहुत पहले तक हिन्दु धर्म कोई पृथक् धर्म नहीं था। धर्म थे- वैदिक, वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन इत्यादि । कालान्तर में कुछ कट्टरपन्थियों ने हिन्दू धर्म का अर्थ किया वैदिक। अब हिन्दू एक संस्कृति होने के साथ-साथ एक धर्म भी कहा जाने लगा। इस प्रकार वैदिक परम्परा को न मानने के कारण जैन और बौद्ध दोनों ही अवैदिक अर्थात् अ-हिन्दू धर्म माने गये।

अगर हिन्दू का अर्थ वैदिक है तो निश्चित रूप से जैन हिन्दू नहीं हैं ,धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से जैन धर्म और हिन्दू धर्म के अनेक अंतर गिनाये जा सकते हैं जो किसी भी कीमत पर एक नहीं हो सकते । आजकल कुछ लोग समन्वय की बात अवश्य करते हैं जिसमें कोई बुराई नहीं है किन्तु यह जब तक समन्वय तक सीमित रहता है तब तक तो ठीक लगता है किन्तु कभी कभी जब इस समन्वय के पीछे विलय की गंध आने लगती है और समन्वय इस शर्त या आग्रह पर किया जाता है कि मूल तो हम हैं और तुम तो एक शाखा मात्र हो तब इस छद्म समन्वय से हमें सतर्क हो जाना चाहिए और अपनी मौलिकता और अस्तित्त्व के रक्षण के लिए हमें यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि जैनधर्म हिन्दूधर्म से अलग और स्वतंत्र धर्म है।

इस बात पर अनेक स्व घोषित इतिहासकार और विद्वान् जैन

परंपरा में श्री राम ,श्री कृष्ण ,श्री हनुमान आदि से सम्बंधित उल्लेखों को उधृत करके यह घोषणा करते हैं कि जैन ग्रंथों में हिन्दू देवी देवताओं के उल्लेख होने से वे हिन्दू ही हैं ,उन्हें मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज बहुमत और बाहुबल से भले ही आप यह कहें लेकिन यथार्थ यह है कि जैन ग्रंथों में ये जैन भगवान् हैं और उनका वीतरागी आराध्य स्वरूप वैसा ही है जैसा भगवान् महावीर का है ,उनकी कथा कहानियां भी भिन्न प्रकार की हैं ,उनके उपदेश और धर्म भी जैनदर्शन की मुख्य धारा वाले ही हैं और अगर तर्क का आधार ग्रंथों में उल्लेख मात्र को बनायेंगे तो वेदों और वैदिक पुराणों में तीर्थंकर आदि की जो स्तुतियाँ की गई हैं उससे तो यह भी सिद्ध हो सकता है कि सभी हिन्दू जैन हैं। यह भारत की व्यापक और समन्वय वादी धार्मिक संस्कृति की खूबसूरती ही है कि वे प्रत्येक परंपरा के उपास्यों को सम्मान देते हैं और अपने ग्रंथों में उनका सम्मान पूर्वक उल्लेख करते हैं। दरअसल प्राचीन काल से भारत में जो सनातन धर्म उपस्थित रहा है वह हमेशा से दो रूपों में रहा है एक वैदिक और दूसरा श्रमण , दोनों एक ही पिता की दो संतानें हैं ,ये एक पिता के होने से एक भी हैं और अलग अलग दर्शन होने से अलग अलग भी हैं ,वैदिक प्रवृत्ति प्रधान तथा श्रमण निवृत्ति की प्रधानता को लिए हुए हैं , ये दोनों भारतीय ज्ञान और साधना परंपरा रुपी नदी के दो तट हैं , ये एक दूसरे के विरोधी भी हैं और पूरक भी हैं , एक के बिना दूसरे का अस्तित्त्व नहीं है , इन्हें आप मिला भी नहीं सकते और जुदा भी नहीं कर सकते , इनके स्वतंत्र अस्तित्त्व से ही दोनों की गरिमा है , इनमें जहाँ एक तरफ बहुत समानताएं हैं तो असमानताएं भी बहुत हैं।

संविधान में हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 के अनुसार हिन्दू में शामिल हैं—हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख (यदि वे मुस्लिम, ईसाई, पारसी या यहूदी न हों) , इसमें भी भौगोलिकता ,सभ्यता और संस्कृति के नाम पर हिन्दू विवाह अधिनियम नामकरण हुआ है , धार्मिक आधार पर तो इसका वर्गीकरण और स्पष्टीकरण हुआ है क्यों कि उसमें पुनः हिन्दू ,बौद्ध,जैन,सिख लिखे गए हैं , यदि जैन हिन्दू है तो अकेला हिन्दू ही लिखते ,जैन क्यों लिखा ? वास्तव में यह मूल भारतीय और अभारतीय धर्मों के भेद को स्पष्ट दर्शाने का स्पष्टीकरण है और यही कारण है कि कोष्ठक में लिखा गया - हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख (यदि वे मुस्लिम, ईसाई, पारसी या यहूदी न हों) , यही व्याख्या अनुच्छेद २५ के सन्दर्भ में भी की जा सकती है जहाँ लिखा है – 'इसमें हिंदुओं के सभी वर्गों और वर्गों के लिए सामाजिक कल्याण और सार्वजनिक चरित्र की हिंदू धार्मिक संस्थाओं में सुधार या उन्हें खोलने का प्रावधान है। इस प्रावधान के अंतर्गत हिंदुओं में सिख, जैन या बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग भी शामिल माने जाएंगे तथा हिंदू संस्थाओं को भी तदनुसार माना जाएगा।'

स्पष्ट है कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से संविधान में भी कानून की दृष्टि से हिन्दू धर्म एक समुच्चय वाची संज्ञा है जो भारतीय मूल धर्मों के लिए उपयोग में लायी गई है और उसके अंतर्गत हिन्दू,जैन ,बौद्ध और सिक्ख धर्म स्वीकार किये गए हैं, हम चाहें तो इसके और अधिक उपभेद करके इसको समझ सकते हैं – १. बहुसंख्यक हिन्दू २. अल्पसंख्यक हिन्दू , इसमें दूसरे उपभेद अल्पसंख्यक हिन्दू में जैन, बौद्ध और सिक्ख सम्मिलित हैं।

निष्कर्ष यह है कि एक भौगोलिकता, संस्कृति और सभ्यता के रूप में शुद्ध भारतीय होने से जैन हिन्दू हैं और धार्मिक रूप से जैन हिन्दू नहीं है । बहुत से लोग आज भी जैनधर्म को हिन्दू धर्म (वैदिक)की एक शाखा बतलाकर उसको हिन्दू धर्म के अन्तर्गत ही मान लेते हैं। जबकि स्थिति ऐसी नहीं है। एक धर्म की दृष्टि से और परंपरागत तथा संवैधानिक रूप में भी हिन्दू धर्म और जैन धर्म दोनों अलग अलग परिगणित होते हैं।

सभी देशवासियों को यह बात समझनी होगी कि भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा का नाश करके एकत्व की स्थापना कभी नहीं की जा सकती, 'अनेकता में एकता' -यह भारतीय संस्कृति की आत्मा है ,भारत वह है जहाँ अनेक धर्मों ने जन्म लिया , निश्चित रूप से वे अलग अलग हैं नहीं तो अनेक शब्द का प्रयोग नहीं होता , और अनेक का प्रयोग नहीं होता तो एकता की बात भी नहीं आती , यदि भारत का एक ही धर्म है – 'हिन्दू' ,तो फिर 'अनेकता में एकता' वाली विशेषता ही निर्मूल हो जाएगी ,और यह स्पष्ट कर दें कि शाखाओं का नाम अनेकता नहीं होता है ,अन्य विदेशी धर्मों में भी अन्दर ही अन्दर अनेक शाखाएं होती हैं लेकिन वे 'एक' कहलाते हैं ,अनेक नहीं ,इसलिए 'अनेकता में एकता' की विशेषता वहां नहीं कही जाती।

विविधता और भिन्नता की खूबी से ही एक उपवन गुलजार होता है,अगर पड़ोसी के उपवन में सिर्फ हरा रंग है और उसकी प्रतिस्पर्धा में हम अपने उपवन को भी एक ही रंग में रंगना चाहते हैं तो हम न सिर्फ अपनी खूबसूरती और मौलिकता को नष्ट कर रहे हैं बल्कि भविष्य में उन्हीं समस्याओं से ग्रसित होने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए जिनसे वे आज ग्रसित हैं।

अब रही हिन्दू सामाजिक एकता और राष्ट्र भक्ति की बात तो उसमें जैन को कभी कोई आपत्ति नहीं रही , न है और न रहेगी, इनकी तो उदारता इतनी ज्यादा है कि भले ही अनेक जैन मंदिरों पर हिन्दू कब्ज़ा किये बैठे हों लेकिन यह सब भूल कर भी ये हिन्दू संगठनों और पार्टियों में न सिर्फ सेवाएं देते हैं बल्कि अकूत धन भी दान में देते हैं,जैन धर्म और तीर्थ की रक्षा में कोई भले ही इनके साथ न रहे पर हिन्दू धर्म के आंदोलनों को अपना आन्दोलन समझ कर उनके साथ कदम से कदम मिला कर चलते हैं।

किन्तु जब अपने मूल स्वरुप पर ही खतरा मंडराने लगे तो उन्हें कहना पड़ता है और बताना पड़ता है कि हमेशा की तरह आज भी भारतवर्ष में जैनधर्म एक स्वतन्त्र ,मौलिक और सम्पूर्ण धर्म है।भारत सरकार ने धार्मिक आधार पर ही इन्हें अल्पसंख्यक घोषित किया है। देश के प्रत्येक कोने में बसा जैन समाज एक स्वतन्त्र समाज है। उनके स्वतन्त्र मौलिक मन्दिर, स्वतन्त्र मौलिक आगम-शास्त्र, स्वतन्त्र मौलिक पूजा-पद्धति तथा स्वतन्त्र मौलिक जीवन शैली, संस्कृति,कला,पुरातत्त्व ,इतिहास एवं मान्यतायें हैं।

शुद्ध खान-पान, सिद्धांत, आचार विचार, विशुद्ध शाकाहार और अहिंसा में विश्वास करने वाली, संयम-तप और नैतिक जीवन मूल्यों में आस्था वाली, मारकाट, दंगों, साम्प्रदायिक हिंसा और भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से दूर, शान्तिप्रिय, शिक्षित, सभ्य, स्वदेश प्रेमी जैन समाज अपने इस प्यारे भारत देश में मानवीय मूल्यों की खुलकर होती त्रासदी तथा अन्धविश्वासों के बीच एक प्रकाशपुंज है, जो भविष्य को सही रास्ता दिखा रही है।

जनगणना में क्या करना चाहिए ?

विगत २०११ की जनगणना में जैन धर्मावलम्बियों की जनसँख्या महज 46 लाख के लगभग दर्ज की गई थी ,जबकि जैन समाज का दावा है कि भले ही वे अन्य की अपेक्षा कम हैं लेकिन इतने भी कम नहीं हैं ,एक अनुमान के आधार पर आज भी जैन धर्मावलम्बियों की संख्या लगभग चार करोड़ होना चाहिए , सरकारी आकड़ों में इतनी कम गणना होने के पीछे जो कारण समझ में आये वे निम्नलिखित प्रकार के हैं –

१. अधिकांश जनगणना कर्मियों द्वारा स्वतः ही फॉर्म में जैन धर्मावलम्बियों को अज्ञानतावश हिन्दू धर्म के कॉलम में जोड़ देना।
२. जैन धर्मावलम्बियों के नाम के आगे 'जैन' न लगा कर गोत्र सेठी, सेठिया, सिंघई,बच्छावत, सिंह आदि लगाना या मूल गाँव या जाति का नाम लगाना।
३. अज्ञानता के कारण स्वयं को जाति के कॉलम में 'जैन' और धर्म के कॉलम में 'हिन्दू' लिखवा देना।
४. इस विषय को गंभीरता से ना लेना।
५. अपनी स्वयं की निजी प्रामाणिक सामाजिक और धार्मिक सर्वे न करवाना।

आगामी जनगणना में निम्नलिखित सतर्कता यदि जैन धर्मावलम्बियों द्वारा अपनाई जाए तो निश्चित रूप से वे अपनी वास्तविक संख्या प्राप्त कर सकते हैं –

१. जनसँख्या का फॉर्म अब डिजिटल भी आने वाला है अतः स्वयं फॉर्म भरें।
२. धर्म के कॉलम में सिर्फ 'जैन' लिखवाएं।
३. भाषा के कॉलम में अपनी भाषा 'प्राकृत' दर्ज करें।
४. समाज में जन जागरण हेतु गाँव गाँव में इसके कार्यक्रम आयोजित करें।
५. प्रत्येक मंदिर ,उपासरे,स्थानक ,स्वाध्याय भवन ,धर्म शाला आदि में इसके पोस्टर बना कर लगायें।
६. समाज के सभी विद्वान्,मनीषी,वक्ता,साधु-साध्वियां अपने प्रवचन उद्बोधनों में इस हेतु प्रेरित करें।
७. सोशल मीडिया पर इसकी आधिकारिक पोस्ट जारी करें।
८. कम से कम जैन टीवी चैनलों पर नियमित इसका विज्ञापन चलवायें।
१०. प्रत्येक स्थान का समाज अपने स्थान पर सरकारी विद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापकों को आमंत्रित कर उनकी कार्यशाला करें और उन्हें यह भेद ज्ञान करवाएं, क्योंकि अधिकांश जनगणना इनके माध्यम से ही करवाई जाती है। उन्हें अपनी तरफ से कुछ सुविधाएँ प्रदान करें।

श्री संतोष जैन पेंढारी "जैन जीवन गौरव सम्मान" से विभूषित

जैन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय कार्य करने वाली महान विभूतियों के सम्मान हेतु 'सकल जैन समाज सेवा संघ' द्वारा एक भव्य "जैन सम्मान समारोह–२०२६" का आयोजन किया गया था। इस गरिमामयी समारोह में नागपुर के प्रतिष्ठित वरिष्ठ समाजसेवी तथा 'भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुंबई' के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी को उनके द्वारा समाज, जैन धर्म की प्रभावना तथा संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण के क्षेत्र में दिए गए दीर्घकालीन, अनवरत और उल्लेखनीय योगदान को रेखांकित करते हुए इस वर्ष के सर्वोच्च व प्रतिष्ठित "जैन जीवन गौरव सम्मान" से विभूषित किया गया। यह शानदार कार्यक्रम रविवार, दिनांक १० मई २०२६ को सायंकाल ५:०० बजे जिलाधिकारी कार्यालय परिसर स्थित नियोजन भवन में अत्यंत हर्षोल्लास, उत्साहपूर्ण और भव्य वातावरण में संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि और जैन अल्पसंख्यक महामंडल के चेयरमैन श्री ललित गांधी ने अपने कर-कमलों द्वारा श्री संतोष जैन पेंढारी को पारंपरिक शॉल, माल्यार्पण, श्रीफल एवं एक आकर्षक स्मृति-चिन्ह प्रदान कर समाज की ओर से उनका नागरिक अभिनंदन किया। इस गौरवशाली अवसर पर उपस्थित महाराष्ट्र के विभिन्न अंचलों से आए गणमान्य अतिथियों, प्रबुद्ध समाजबंधुओं एवं नागरिकों ने करतल ध्वनि से श्री पेंढारी का अभिवादन किया और उनके भावी सामाजिक व धार्मिक कार्यों की सफलता हेतु अपनी मंगलमय शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। कार्यक्रम में उपस्थित मान्यवरों ने जैन समाज की प्रगति, चहुंमुखी विकास तथा धार्मिक-सामाजिक एकता के लिए उनके द्वारा दिए गए अद्वितीय सेवाभाव को समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायी बताया और उनके कार्यों की भूरि-भूरि सराहना की।

जागो जैन समाज : जनगणना में धर्म 'जैन', भाषा 'प्राकृत' लिखने का समय आया
(जनगणना : जब सही पहचान लिखेगा समाज, तभी सशक्त होगा जैन भविष्य)

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारत की आत्मा उसकी विविधता में बसती है। यहाँ अनेक धर्म, भाषाएँ, परंपराएँ और सांस्कृतिक धाराएँ सहस्राब्दियों से साथ-साथ प्रवाहित होती रही हैं। इस विराट विविधता का सबसे विश्वसनीय और आधिकारिक दस्तावेज यदि कोई है, तो वह है—जनगणना। जनगणना केवल जनसंख्या की गणना नहीं, बल्कि राष्ट्र की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक स्वरूप, भाषाई विरासत और धार्मिक पहचान का प्रमाणिक अभिलेख होती है।

सनातन जैन धर्म भारत की प्राचीन आध्यात्मिक परंपराओं में से एक है। यह एक स्वतंत्र, विशिष्ट और शाश्वत धर्म है, जिसे भारतीय संविधान द्वारा भी पृथक धर्म के रूप में मान्यता प्राप्त है। अपनी समृद्ध दार्शनिक परंपरा, अहिंसा-प्रधान जीवनदृष्टि तथा व्यापक आगमिक साहित्य के कारण जैन धर्म भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण आधारस्तंभ रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि जनगणना जैसे राष्ट्रीय अभिलेख में जैन धर्म की पहचान स्पष्ट और प्रमाणिक रूप में दर्ज हो।

ऐसे समय में जब भारत सरकार द्वारा की जाने वाली जनगणना का प्रथम चरण मकान गणना के रूप में शुरू हो चुका है तथा द्वितीय चरण 2027 में होगा जिसमें जनगणना की जाएगी, जैन समाज के लिए यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि वह अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के प्रति सजग, संगठित और उत्तरदायी बने। यह अवसर केवल संख्या दर्ज कराने का नहीं, बल्कि अपनी अस्मिता को राष्ट्रीय पटल पर प्रमाणिक रूप से स्थापित करने का है।

जैन धर्म : एक स्वतंत्र और शाश्वत परंपरा :

जैन धर्म भारत की प्राचीनतम आध्यात्मिक परंपराओं में से एक है। यह किसी शाखा या उपशाखा का नाम नहीं, बल्कि स्वतंत्र दर्शन, विशिष्ट साधना-पद्धति और गहन नैतिक मूल्यों से युक्त एक पूर्ण धर्म है। अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत, करुणा और आत्मानुशासन जैसे सिद्धांतों ने भारतीय चिंतन को गहराई से प्रभावित किया है।

भारतीय संविधान ने भी जैन धर्म को पृथक धार्मिक पहचान प्रदान की है। अतः जनगणना जैसे राष्ट्रीय अभिलेख में धर्म के कॉलम में स्पष्ट रूप से 'जैन' अंकित किया जाना केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि संवैधानिक अधिकार और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व दोनों है।

भाषा 'प्राकृत' : जैन संस्कृति की मूल वाणी :

जैन आगम, प्राचीन आचार-ग्रंथ, तत्त्वचिंतन, चरित्र साहित्य और आध्यात्मिक वाङ्मय का विशाल भंडार मुख्यतः प्राकृत भाषा में रचा गया है। प्राकृत केवल भाषा नहीं, बल्कि जैन ज्ञानधारा की जीवनरेखा है। भारत सरकार ने भी इसे शास्त्रीय भाषा घोषित किया है। यदि जनगणना में भाषा के कॉलम में 'प्राकृत' का उल्लेख व्यापक रूप से होता है, तो यह भाषा पुनः राष्ट्रीय विमर्श में प्रतिष्ठित होगी। इससे उसके संरक्षण, अध्ययन, शोध, शिक्षण और सरकारी स्तर पर मान्यता की संभावनाएँ सुदृढ़ होंगी। यह जैन समाज द्वारा अपनी भाषिक जड़ों को पुनः स्मरण करने का ऐतिहासिक अवसर है।

जनगणना और नीतिगत महत्व :

जनगणना के आँकड़े शासन-प्रशासन की योजनाओं, नीतियों और प्रतिनिधित्व की दिशा तय करते हैं। किसी समाज की संख्या जितनी स्पष्ट और प्रमाणिक रूप से दर्ज होती है, उसकी समस्याएँ, अपेक्षाएँ और योगदान उतनी ही गंभीरता से देखे जाते हैं।

यदि जैन समाज का प्रत्येक परिवार धर्म के कॉलम में 'जैन' लिखवाता है, तो समाज की वास्तविक जनसंख्या का विश्वसनीय आँकड़ा सामने आएगा। इससे शिक्षा, संस्कृति, अल्पसंख्यक हितों, धार्मिक धरोहरों और सामाजिक योजनाओं के संदर्भ में जैन समाज की स्थिति अधिक सशक्त रूप से उभरेगी।

भ्रामक संदेशों से सावधानी आवश्यक :

वर्तमान समय में सोशल मीडिया सूचना का सशक्त माध्यम है, किन्तु अपुष्ट सूचनाओं का भी सबसे तीव्र प्रसार वहीं होता है। जनगणना को लेकर कई प्रकार के भ्रम, अपूर्ण सूचनाएँ और तिथियों संबंधी भ्रामक संदेश प्रसारित होते रहते हैं। समाज को चाहिए कि किसी भी संदेश को बिना तथ्य-जांच के आगे न बढ़ाए।

जागरूकता अभियान तथ्यपरक, संयमित और प्रमाणिक होना चाहिए। विशेषकर पूज्य संतों, विद्वानों, सामाजिक संगठनों और प्रबुद्ध वर्ग की यह जिम्मेदारी है कि वे समाज तक केवल सत्यापित जानकारी ही पहुँचाएँ।

अभी से बने सुनियोजित कार्ययोजना :

जनगणना के समय अचानक जागरूकता नहीं आती; उसके लिए पूर्व तैयारी आवश्यक होती है। अतः अभी से संगठित प्रयास प्रारम्भ होने चाहिए—

कुछ आवश्यक सुझाव :

1.घर-घर जागरूकता :अभियान चलाया जाए कि धर्म के कॉलम में 'जैन' तथा भाषा के कॉलम में 'प्राकृत' भरना है।

2.युवा वर्ग को डिजिटल प्रशिक्षण दिया जाए, क्योंकि अधिकांश प्रक्रिया ऑनलाइन आधारित होगी।

www.amarbharti.com

श्वत तीर्थ अयोध्या में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की चिंतन बैठक सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी

अमर भारती ब्यूरो

शाश्वत तीर्थ अयोध्या

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में चिंतन बैठक हुई सम्पन्न

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने लिए कई निर्णय

तीर्थ अयोध्या में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की चिंतन बैठक सम्पन्न

my city # हम लोग

जैन तीर्थों की रक्षा को

अयोध्या में जुटे देशभर के जैन प्रतिनिधि, सभी तीर्थों पर सम्मेलन

श्वत तीर्थ अयोध्या में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन ... की चिंतन बैठक सम्पन्न

उत्तर प्रदेश /अयोध्या

"कृष्णानगर अछूता नहीं रहेगा"
देश की राजधानी में
गुरुवर को दिल्ली लाना है।

ऑनलाइन सुरक्षित होगी जैन तीर्थों की गौरव गाथा

संवाद न्यूज एजेंसी

संग्रहालय और ज्ञान केंद्र स्थापित करने की योजना

रजत स्थापना वर्ष की चिंतन बैठक

2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक

की चिंतन बैठक सम्पन्न

तीर्थक्षेत्र कमेटी की चिंतन बैठक सम्पन्न

अयोध्या

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की चिंतन बैठक सम्पन्न

अयोध्या, समाचार जगत ब्यूरो। शाश्वत तीर्थ अयोध्या में भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि दिगम्बर जैन मंदिर, बड़ी मूर्ति, रायगंज में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक चिंतन बैठक परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुई। बैठक का शुभारंभ प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन मंत्री-उत्तरप्रदेश-उत्तरांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंगलाचरण से शुभारंभ हुआ एवं कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन उपस्थित वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा किया गया, जिसमें मुख्यरूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन, महामंत्री संतोष पेंढारी, कोषाध्यक्ष अशोक दोशी एवं समस्त आंचलीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पदाधिकारियों के द्वारा किया गया। जवाहरलाल जैन (चेयरमैन-शतकोत्तर रजत जयंती वर्ष समिति) के द्वारा अनेक योजनाएं इस कार्यक्रम को चार-चांद लगा सकती है, प्रस्तुत की गयी। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री हसमुख ... द्वारा एक विस्तृत कार्य योजना प्र... गयी, जिसमें प्रान्तीय एवं क्षेत्रीय ... सभी पदाधिकारी जुड़कर किस प्र... से इस होने वाले आयोजन को स... कर सकते हैं, उसकी संरचना प्र... गयी। इसी क्रम में जैन समाज की ... साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती ... ने सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता... उद्बोधन देते हुए कहा कि प्रत्येक ... मुख्यरूप से तीन परिषद का गठन ... चाहिए। अंतरंग परिषद, बाह्य परि... सामाजिक परिषद। इस प्रकार से ... अपने कार्यक्रमों का समायोजन ... समाज को जोड़ने का उपक्रम सदै... अपने तीर्थों की सुरक्षा एवं उनका ... विकास अवश्य करें। प्राचीन तीर्थ... प्रदान करें, उनके विकास के लिए ... योजनाएँ बनाएं एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी ... इस 125 वर्षीय कार्यक्रम में हमारा ... आशीर्वाद है।

तीर्थ अयोध्या में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की चिंतन बैठक सम्पन्न

एकजुट हों

और शिलालेख लगाने का निर्णय

शाबास इंडिया www.shabaasindia.com

तीर्थ अयोध्या में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की चिंतन बैठक सम्पन्न

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष को भव्य एवं व्यापक स्तर पर मनाने की बनी रूपरेखा

...परिवार

रायपुर/धर्म समाज/देश

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की चिंतन बैठक सम्पन्न

कलेक्टर-सीईओ कार पूलिंग कर पहुंचे सुशासन शिविर

जनता का विश्वास ही हमारी ताकतः बृजमोहन अग्रवाल

वाहनों के उपयोग में मितव्ययिता बरतने मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े के सख्त निर्देश

...न परंपरा, साहित्य और तीर्थों का किया जाएगा डिजिटल...

ऋषभदेव के ही वंश में पैदा हुए भगवान राम : ज्ञानमती

3.मंदिरों, सभागारों, समाज भवनों और आयोजनों में इस विषय पर संक्षिप्त मार्गदर्शन दिया जाए।

4.सोशल मीडिया पर प्रमाणिक पोस्टर, वीडियो और संदेश तैयार कर प्रसारित किए जाएँ।

5.क्षेत्रीय समितियाँ गठित हों, जो स्थानीय स्तर पर परिवारों से संपर्क करें।

6.सराक क्षेत्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार, बुंदेलखंड आदि क्षेत्रों में विशेष अभियान चलाया जाए, जहाँ जैन समाज की उपस्थिति ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

7. स्वयं की ऑनलाइन गणना के लिए सबसे अच्छा तरीका है प्रत्येक गांव, कस्बा, शहर की जैन पंचायत समिति या कोई जैन संस्था एक निर्धारित स्थान अथवा प्रत्येक जैन मंदिर में निःशुल्क ऑनलाइन विवरण दर्ज कराने की सुविधा दें ताकि सभी वहाँ जाकर स्वयं अपनी सही जनगणना करवा सकें।

स्व-पहचान का युग :

अब समय बदल चुका है। अनेक व्यवस्थाएँ ऑनलाइन हैं और व्यक्ति स्वयं भी अपनी जानकारी भर सकता है। अतः यदि समाज सजग रहेगा, तो अपनी पहचान स्वयं सुरक्षित कर सकेगा। यदि उदासीन रहेगा, तो अन्य लोग सामान्य जानकारी के आधार पर प्रविष्टियाँ भर देंगे।

यह केवल एक शब्द लिखने का विषय नहीं, बल्कि यह तय करने का क्षण है कि आने वाली पीढ़ियाँ सरकारी अभिलेखों में स्वयं को किस रूप में देखेंगी।

सांस्कृतिक उत्तरदायित्व का क्षण :

जब कोई समाज अपनी पहचान के प्रति जागरूक होता है, तभी उसकी परंपराएँ सुरक्षित रहती हैं, उसकी संस्कृति जीवित रहती है और उसकी आवाज़ प्रभावी बनती है। जैन समाज ने भारत को अहिंसा, शाकाहार, तप, ज्ञान, व्यापार नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं की अमूल्य धरोहर दी है। अब समय है कि वह अपनी पहचान के प्रश्न पर भी उतना ही सजग बने।

यदि प्रत्येक जैन परिवार आगामी जनगणना में धर्म के कॉलम में 'जैन' और भाषा के कॉलम में 'प्राकृत' अंकित कराता है, तो यह केवल सांख्यिकीय सफलता नहीं होगी, बल्कि जैन अस्मिता, भाषिक गौरव और सांस्कृतिक चेतना का ऐतिहासिक पुनर्जागरण सिद्ध होगा।

आह्वान :

यह विषय किसी संगठन, क्षेत्र या पंथ विशेष का नहीं, सम्पूर्ण जैन समाज की सामूहिक चेतना का विषय है। इसे केवल सुझाव न समझा जाए, बल्कि एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक संकल्प के रूप में स्वीकार किया जाए। जब समाज स्वयं जागेगा, तभी इतिहास उसे सही रूप में दर्ज करेगा।

जब पहचान स्पष्ट होगी, तभी भविष्य सशक्त होगा।

और जब धर्म 'जैन' तथा भाषा 'प्राकृत' सम्मानपूर्वक अंकित होगी, तभी जैन संस्कृति का गौरव और अधिक उज्ज्वल होकर राष्ट्रीय चेतना में प्रतिष्ठित होगा।

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी कर्मठ व्यक्तित्व पुरस्कार से सम्मानित श्री जवाहरलाल जैन, सिकन्दराबाद

२०२५ में खण्डवा के श्री जितेन्द्र –सपना लुहाड़िया के सौजन्य से अ. भा. दि. जैन युवा परिषद द्वारा स्थापित इस पुरस्कार से २०२५ में श्री कमल जैन कासलीवाल को सम्मानित किया गया था।

२०२६ के पुरस्कार हेतु उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखण्ड दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन सिकन्दराबाद का चयन किया गया इसके अन्तर्गत रु. ५१,००० की सम्मान राशि शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति प्रदान की जाती है।

श्री जैन को यह सम्मान ५ अप्रैल २०२६ को अयोध्या में प्रदान किया गया।

भारतीय इतिहास की चुप्पी और जैन सम्राटों की अनसुनी गाथा पर शोध अध्ययन हों

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष 2026-27 को प्रकाशन योजना में जैन राजाओं एवं राजवंशों पर एक स्वतंत्र कृति तैयार करने का निर्णय किया है। डॉ. सुनील जी की पीड़ा अक्षरश: सत्य है, इसकी आंशिक पूर्ति में ही यह योजना बनाई गई है।

- संपादक

जैन धर्म के इतिहास में चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट खारवेल, राजा अमोघवर्ष, और चालुक्य/होयसल वंश के शासकों ने जैन धर्म को अत्यधिक संरक्षण दिया। इन राजाओं ने जैन विद्वानों को समर्थन दिया, गुफाएं बनवाईं और कर्नाटक व कलिंग (ओडिशा) में धर्म का प्रसार किया। चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने अंतिम दिनों में दिगम्बर जैन साधु के रूप में जीवन व्यतीत किया।

भारत का इतिहास केवल तलवारों की टकराहट और साम्राज्यों के विस्तार की कथा नहीं है; यह विचारों, मूल्यों और जीवन-दर्शन की भी यात्रा है। दुर्भाग्य से, इस यात्रा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय "जैन सम्राटों का योगदान" इतिहास के पन्नों में या तो सिमट कर सीमित कर दिया गया है, या लगभग विस्मृत विलोपित कर दिया गया है।

जैन धर्म, जो अहिंसा, अपरिग्रह और आत्मसंयम जैसे सार्वकालिक मूल्यों पर आधारित है, केवल मठों और तीर्थों में जीवित नहीं रहा; इसे राजसत्ता का भी संरक्षण मिला। यह तथ्य जितना ऐतिहासिक रूप से सत्य है, उतना ही आज के विमर्श में अनुपस्थित भी है इसके लिए शोधपरक संगोष्ठी आयोजित हो।

जब हम चन्द्रगुप्त मौर्य का स्मरण करते हैं, तो उन्हें प्रायः एक विजेता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन उनके जीवन का अंतिम और शायद सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जैन आचार्य भद्रबाहु के सान्निध्य में वैराग्य अपनाना इतिहास की मुख्यधारा में आध्यात्मिक चिंतन क्यों नहीं उभरता? क्या यह इसलिए कि त्याग वैराग्य की कथा, विजय की कथा से कम आकर्षक मानी जाती है?

इसी प्रकार सम्प्रति, जिन्हें 'जैन अशोक' कहा जाता है, ने जिस व्यापक स्तर पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया, मंदिरों का निर्माण कराया और धर्मदूतों को दूर-दूर तक भेजा—वह किसी भी दृष्टि से एक सांस्कृतिक क्रांति से कम नहीं था। फिर भी, उनका नाम सामान्य पाठ्यक्रमों में लगभग अनुपस्थित है।

गुजरात के कुमारपाल ने तो एक कदम आगे बढ़कर शासन की आत्मा में ही जैन दर्शन को स्थापित किया। आज जब 'नैतिक शासन' की चर्चा होती है, तब कुमारपाल का उदाहरण क्यों नहीं दिया जाता?

दक्षिण भारत की वीरांगना रानी अब्बक्का चौटा इस परंपरा की एक और सशक्त कड़ी हैं। उन्होंने विदेशी आक्रमणों का सामना करते हुए न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा की, बल्कि जैन संस्कृति को भी संरक्षण दिया। उनका व्यक्तित्व यह सिद्ध करता है कि आस्था और प्रतिरोध एक साथ चल सकते हैं।

यह सूची यहीं समाप्त नहीं होती। खारवेल से लेकर अमोघवर्ष प्रथम और दक्षिण के गंग वंश व होयसाल वंश तक—जैन धर्म को राजकीय संरक्षण देने वाले शासकों की एक लंबी परंपरा रही है। यह परंपरा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक भी थी।

फिर प्रश्न उठता है—इतिहास में यह मौन क्यों?

संभवतः इसका उत्तर इतिहास लेखन की प्रवृत्ति में छिपा है, जहाँ युद्ध, विस्तार और सत्ता संघर्ष को प्राथमिकता दी गई, जबकि अहिंसा, संयम और नैतिक शासन को अपेक्षाकृत कम महत्व मिला। जैन परंपरा का शांत, अनाक्रामक स्वभाव भी इस उपेक्षा का एक कारण हो सकता है। लेकिन अब यह मौन टूटना चाहिए।

आज आवश्यकता है कि जैन सम्राटों की गौरवगाथा को केवल धार्मिक संदर्भ में नहीं, बल्कि भारत की समग्र सांस्कृतिक विरासत के हिस्से के रूप में पुनः स्थापित किया जाए। शैक्षिक पाठ्यक्रमों में संतुलन लाया जाए, शोध को प्रोत्साहन मिले और सार्वजनिक विमर्श में इन नामों को स्थान दिया जाए।

इतिहास केवल अतीत का लेखा-जोखा नहीं होता; वह वर्तमान की चेतना और भविष्य की दिशा भी तय करता है। यदि हम अपने ही इतिहास के महत्वपूर्ण अध्यायों को अनदेखा करेंगे, तो हमारी समझ अधूरी ही रहेगी।

जैन सम्राटों की गाथाएँ हमें यह सिखाती हैं कि शक्ति का सर्वोच्च रूप विजय नहीं, बल्कि संयम है; और शासन का सर्वोच्च आदर्श विस्तार नहीं, बल्कि करुणा है।

अब प्रश्न यह नहीं कि इतिहास ने उन्हें कितना स्थान दिया अब तो प्रश्न यह है कि हम उन्हें कितना स्थान देने के लिए तैयार हैं।

महावीराचार्य पुरस्कार 2026 समर्पित

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से डॉ. अनुपम जैन परिवार द्वारा प्रायोजित एवं दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा संचालित महावीराचार्य पुरस्कार देश का प्रतिष्ठित वार्षिक पुरस्कार है जो जैन गणित के क्षेत्र में उच्चस्तरीय शोध एवं अनुसंधान कार्य हेतु प्रदान किया जाता है।

वर्ष २०२१ में स्थापित इस पुरस्कार से अब तक पद्मश्री प्रो. आर. सी. गुप्त (झांसी), प्रो. एस. सी. अग्रवाल (मेरठ), प्रो. एस. के. बंडी (इन्दौर), प्रो. पद्मावथम्मा (मैसूर), प्रो. आर. एस. शाह (पुणे) को सम्मानित किया जा चुका है। **वर्ष 2026 का पुरस्कार इन्दौर की युवा विदुषी डॉ. प्रगति जैन को समर्पित किया गया।** पुरस्कार समर्पण समारोह प्रसिद्ध तीर्थ अयोध्या में गणिनी ज्ञानमती माताजी के ससंघ सान्निध्य में दि. ०३ अप्रैल २०२६ को सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं IIT इन्दौर के पूर्व निदेशक एवं यांत्रिकी के आचार्य प्रो. नीलेश कुमार जैन ने कहा कि भारतीय परम्परा में गणित का समृद्ध इतिहास रहा है और जैन गणित ने इसमें विशेष भूमिका निभाई है। आज जरूरत इस बात की है कि हम सरल सुबोध किन्तु प्रामाणिक रूप में अंग्रेजी भाषा में जैनाचार्यों का योगदान युवा पीढ़ी को देवें तो वे इसे आत्मसात कर सकेगें। इन उपलब्धियों को पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित कराना होगा। महावीराचार्य पुरस्कार सदृश पुरस्कार ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के पूर्व कुलपति प्रो. राजीव जैन ने कहा कि जैन गणित चिन्तन को एक नई दिशा देता है। इस क्षेत्र में प्रो. एल. सी. जैन एवं प्रो. अनुपम जैन ने मजबूत आधार बना दिया है एवं कार्य को आगे बढ़ाना डॉ. प्रगति जैन जैसी युवा शोधकर्ताओं का काम है। ऐसे पुरस्कार शोधकर्ताओं को उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

विशिष्ट अतिथि एवं निर्णायक मण्डल की वरिष्ठ सदस्या देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर की पूर्व कुलगुरु प्रो. रेणु जैन ने कहा कि जैन शास्त्रों में निहित गणितीय सामग्री भविष्य की संभावनाओं को समझने में एवं उन पर आधारित गणितीय मॉडल बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

पुरस्कार प्रायोजक एवं निर्णायक मण्डल के सदस्य डॉ. अनुपम जैन ने भारतीय गणित के विकास में जैन गणित की भूमिका एवं भावी अध्ययन की आवश्यकता को प्रतिपादित किया एवं कहा कि मैंने अपनी पुस्तक जैन गणित में अब तक के कार्यो को सुव्यवस्थित कर दिया है। किन्तु अलौकिक गणित के क्षेत्र में अभी बहुत काम शेष है। विशेषत: कर्मसिद्धान्त के गणित के गणितीय मॉडल बनाने में। इस सन्दर्भ में आपने प्रो. रेणु जैन से नेतृत्व प्रदान करने का अनुरोध किया।

डॉ. अनुपम जैन एवं श्रीमती निशा जैन ने डॉ. प्रगति जैन एवं उनके पति श्री विजय जैन का शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं रु. ५१०००/– की सम्मान निधि से सम्मान किया।

पुरस्कृत विदुषी डॉ प्रगति जैन ने अपने गुरू डॉ. अनुपम जैन तथा पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि यह सम्मान उनके लिए प्रेरणा का स्रोत है और भविष्य में वे जैन गणित के क्षेत्र में और अधिक योगदान देने का प्रयास करेंगी।

उपस्थित विद्वत् समुदाय को अपना आशीर्वाद देते हुए प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने कहा कि १९९५ में डॉ. अनुपम जैन को प्रथम गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार से सम्मानित किया गया था इन ३० वर्षों में आपने जैन गणित पर इतना शोध एवं श्रम किया कि आज वे अपनी शिष्या को स्नेह पूर्वक सम्मानित कर रहे है। हम जैन गणित के क्षेत्र में किये गये कार्यो हेतु प्रगति जी को आशीर्वाद प्रदान करते है तथा आशा है कि वे जैन गणित के क्षेत्र में और भी उपलब्धियॉ अर्जित करेंगी।

कार्यक्रम के मंच पर आचार्य श्री विभवसागर जी के ४ शिष्य पू. मुनिगण विराजमान थे। पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी सहित कार्यक्रम में प्रो. आनन्दवर्द्धन (BHU–वाराणसी), विद्वत् महासंघ के ७५ से अधिक विद्वान तथा शताधिक जैन बन्धु/बहने उपस्थित रहे। डॉ. प्रगति जैन के परिजनों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती पिंकी (इन्दौर) अजमेरा के मंगलाचरण में हुआ।

आभार माना श्री प्रद्युम्न जैन (मेरठ) ने। कार्यक्रम का सशक्त संचालन, महासंघ के महामंत्री श्री विजयकुमार जैन ने किया।

ज्ञान भारतम् मिशन के तहत जनपद में 'राष्ट्रीय पाण्डुलिपि सर्वेक्षण' अभियान का शुभारम्भ

साढूमल में स्थित 109 वर्ष पुरानी संस्था से हुई शुरुआत, दुर्लभ हस्तलिखित पांडुलिपियों का किया गया डिजिटल सर्वेक्षण

ललितपुर। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित ज्ञान भारतम् मिशन के अंतर्गत देशव्यापी 'राष्ट्रीय पाण्डुलिपि सर्वेक्षण' अभियान का शुभारम्भ ललितपुर जनपद में हो गया है। इस महत्वपूर्ण योजना की शुरुआत जनपद की 109 वर्ष पुरानी प्रतिष्ठित संस्था श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं गणेश वर्णी छात्रावास, साढूमल से की गई, जहाँ सुरक्षित दुर्लभ हस्तलिखित पांडुलिपियों का सर्वेक्षण एवं डिजिटलीकरण प्रक्रिया प्रारम्भ की गई।

योजना से जुड़े पुरातत्व एवं इतिहास प्रेमी फिरोज इकबाल ने विद्यालय पहुँचकर पुस्तकालय में संरक्षित पांडुलिपियों का निरीक्षण किया तथा उनकी जानकारी ज्ञान भारतम् ऐप पर अपलोड की। उन्होंने बताया कि विद्यालय में सैकड़ों वर्ष पुरानी अनेक दुर्लभ पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। अगले चरण में हीरा निधि साढूमल में संरक्षित पांडुलिपियों का सर्वेक्षण किया जाएगा।

जनपद भर में होगा व्यापक सर्वेक्षण अभियान :

शासन के निर्देशानुसार इस योजना के अंतर्गत जनपद के निजी एवं सरकारी पुस्तकालयों, संग्रहालयों, शिक्षण संस्थानों, शोध संस्थानों, संस्कृत पाठशालाओं, मंदिरों, मठों, आश्रमों, गुरुकुलों तथा ट्रस्टों में उपलब्ध पांडुलिपियों का सर्वेक्षण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त निजी संग्रहकर्ताओं, पुरोहितों, धर्माचार्यों, ज्योतिषाचार्यों, आयुर्वेदाचार्यों तथा संस्कृत एवं प्राचीन भाषाओं के विद्वानों के पास सुरक्षित निजी संग्रह भी चिन्हित किए जाएंगे।

विशेष बात यह है कि पांडुलिपियों का स्वामित्व संबंधित संग्रहकर्ताओं के पास ही सुरक्षित रहेगा तथा केवल उनका डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाएगा।

भारत की ज्ञान विरासत को विश्व पटल पर लाने का संकल्प : विद्यालय ट्रस्टी एवं जैन दर्शन-प्राकृत भाषा मनीषी डॉ. सुनील संचय ने बताया कि ज्ञान भारतम् मिशन भारत की समृद्ध पांडुलिपि परंपरा को संरक्षित करने की अत्यंत महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय पहल है। इसका उद्देश्य देशभर में बिखरी पांडुलिपियों की पहचान करना, उनका सूचीकरण करना, वैज्ञानिक संरक्षण देना तथा उन्हें एक केंद्रीय डिजिटल मंच पर उपलब्ध कराना है।

उन्होंने कहा कि यह मिशन भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने का माध्यम बनेगा। साथ ही शिक्षा, शोध और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को नई दिशा देगा। यह पहल 'विकसित भारत 2047' के संकल्प के अनुरूप है।

विद्यालय परिवार ने किया सहयोग :

इस अवसर पर विद्यालय ट्रस्टी देवेंद्र जैन झंडा वाले, गृहपति पंडित संतोष शास्त्री, प्रधानाचार्य अभिषेक शास्त्री सहित अन्य पदाधिकारियों ने विद्यालय में सुरक्षित पांडुलिपियों की जानकारी उपलब्ध कराई तथा सर्वेक्षण कार्य में सहयोग प्रदान किया।

हीरा निधि साढूमल के प्रमुख देवेंद्र जैन झंडा ने हीरा निधि में उपलब्ध महत्वपूर्ण पांडुलिपियों का अवलोकन कराया और जल्द ही अपलोड कराने की बात कही।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में पुरातत्व विभाग झांसी एवं ललितपुर की संयुक्त टीम ने नगर स्थित अभिनंदनोदय तीर्थक्षेत्र पहुँचकर नगर में उपलब्ध पांडुलिपियों की भी जानकारी ली थी इस दौरान संजीव जैन सीए, डॉ सुनील संचय, संजय मोदी, सनत मलैया ने टीम को जानकारी प्रदान की।

तीर्थों के विकास के लिये समर्पित सम्पूर्ण भारत मेंभारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी"मध्यांचल" की एक मात्र अनूठी योजना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी "मध्यांचल" की "अनूठी योजना" तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन और यात्री सुविधाओं के विस्तार के लिए एक मिसाल बन चुकी है। लगभग 12 वर्ष पूर्व स्वर्गीय श्री विमल जी सोगानी द्वारा शुरू की गई इस पावन योजना के तहत धर्मालु परिवारों के घरों से अनुपयोगी सामग्री (अटाले व अखबार) का संग्रह किया जाता है और उससे प्राप्त आय को सीधे तीर्थों के विकास में लगाया जाता है। वर्तमान अध्यक्ष श्री डी.के. जैन साहब के नेतृत्व और केंद्रीय समिति के सहयोग से अब तक करीब 54 लाख रुपये के निर्माण कार्य किए जा चुके हैं। इसके अंतर्गत अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से भोजपुर में आचार्य मानतुंगाचार्य जी की जीर्ण-शीर्ण छत्री का ऐतिहासिक जीर्णोद्धार किया गया, बनेडियाजी में एक भव्य सभा गृह का निर्माण हुआ और सुरक्षा के लिए बनेडिया व बावनगजा सिद्ध क्षेत्र में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए। साथ ही, श्री अशोक जैन 'जैनम' के संपादन में 108 तीर्थों की जानकारी वाली 'तीर्थ क्षेत्र दर्पण' पत्रिका की 1000 प्रतियां प्रकाशित कर वितरित की गई।योजना को और अधिक वृहद रूप देते हुए अब इसके दायरे में देश भर के कई अन्य तीर्थ क्षेत्रों को जोड़ा जा रहा है, जहाँ यात्रियों की सुविधा और पर्यावरण संरक्षण के अभूतपूर्व कार्य किए गए हैं। योजना के अंतर्गत प्रथम व द्वितीय चरण में नेमावर, थुबोनजी, बजरंगगढ़, गोमटगिरी, इंदौर छावनी, धार, खनियाधाना और नैनागिरी सहित तीन दर्जन से अधिक क्षेत्रों में यात्रियों के लिए वॉटर कूलर तथा शोले के वस्त्र धोने हेतु वाशिंग मशीनें उपलब्ध कराई गई हैं। इसके अलावा, गोमटगिरी में वृक्षारोपण हेतु ₹51,000/- की राशि भेंट की गई और विभिन्न तीर्थों पर बिजली की आत्मनिर्भरता के लिए अत्याधुनिक सोलर प्लांट स्थापित किए गए हैं। वर्तमान में योजना प्रभारी श्री अशोक जैन 'जैनम', सहप्रभारी श्री कैलाश सेठी, महामंत्री श्री राजकुमार घाटे, कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद पापड़ीवाल और राष्ट्रीय चेयरमैन (सर्वेक्षण समिति) श्री जैनेश झांझरी के सक्रिय सहयोग से इस अभियान को घर-घर तक पहुँचाने का संकल्प निरंतर जारी है।

मथुरा चौरासी से होगा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 'शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव' का भव्य शुभारम्भ; तैयारियाँ शुरू

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव कार्यक्रम का शुभारम्भ अन्तिम केवली श्री जम्बू स्वामी जी की मोक्षस्थली एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी की उद्गम स्थलीय; श्री मथुरा चौरासी से 21-22 अक्टूबर 2026 को भव्यातिभव्य रूप में होने जा रहा है, जिसकी विशेष तैयारियों व रूपरेखा तैयार करने तथा उनको निर्णायक रूप देने के सम्बन्ध में मथुरा चौरासी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री विजय सेठ, प्रबन्धक श्री राहुल सेठ, श्री संजीव जैन, श्री राजीव जैन, श्री सुभाष जी, श्री जयकुमार जैन कोटा, श्री हसमुख गांधी, इन्दौर, मध्यांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री डी०के० जैन, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन गाजियाबाद, शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव कमेटी के चैयरमैन तथा उत्तर प्रदेश उत्तरांचल कमेटी के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन सिकन्दराबाद, प्रचार मन्त्री श्रीमती मीनू जैन आदि की एक महत्वपूर्ण बैठक मथुरा चौरासी क्षेत्र में सम्पन्न हुई जिसमें 21-22 अक्टूबर से सम्बन्धित सभी कार्यक्रमों पर विस्तृत रूप से विचार विमर्श हुआ जिसमें सभी ने कार्यक्रम के सम्बन्ध में अपने-अपने विचार रखे।

बैठक में श्रीमती मीनू जैन द्वारा तीर्थक्षेत्र कमेटी के अतीत से वर्तमान को दर्शाती एक डॉक्यूमेंट्री दिखाई गयी जिसे सभी उपस्थित महानुभावों ने रुचिपूर्वक सहमति प्रदान की। बैठक में आचार्य 108 श्री सौभाग्य सागर जी महाराज एवं आचार्य 108 श्री सुरत्न सागर जी महाराज ससंघ के मथुरा चौरासी क्षेत्र में होने वाले सम्भावित चातुर्मास के सम्बन्ध में भी विचार विमर्श किया गया तथा चातुर्मास सम्बन्धित सभी व्यवस्थाओं की जानकारी ली गयी। मथुरा चौरासी क्षेत्र के सभी पदाधिकारी आचार्य श्री के चातुर्मास को लेकर अत्यन्त उत्साहित हैं।

क्षेत्र पर भावी कार्यक्रमों से सम्बन्धित स्थान, कमरों, भोजनशाला आदि का निरीक्षण तीर्थ क्षेत्र कमेटी तथा मथुरा चौरासी क्षेत्र कमेटी के द्वारा किया गया।

जैन समाज की राजनीतिक और सामाजिक मजबूती के लिए स्व-जनगणना सबसे बड़ा हथियार: तीर्थक्षेत्र कमेटी

जैन समाज में अपनी ही स्व-जनगणना के प्रति उत्साह और जोश की कमी क्यों दिख रही है, यह आज पूरे समाज के सामने एक बड़ा और गंभीर यक्ष प्रश्न बन चुका है। इसी उदासीनता को तोड़ने और समाज को जगाने के लिए भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बु प्रसाद जैन और 125वें स्थापना वर्ष समिति के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन के साथ श्री हसमुख गांधी, इंदौर श्री जय कुमार जैन कोटा, मध्यांचल समिति के अद्यक्ष श्री एन.के. जैन, 'चैनल महालक्ष्मी' के शरद जैन और उत्तर प्रदेश की प्रचार मंत्री श्रीमती मीनू जैन आदि देश के विभिन्न क्षेत्रों में लगातार जागरूक सभाएँ कर रहे हैं। इस राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत टीकमगढ़ में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज, बड़ौदा में आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज, फिरोजाबाद (मरसलगंज गौरव) में आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी व आचार्य श्री सुरत्न सागर जी महाराज तथा दिल्ली में पूज्य गुरु मां सत्यवती जी के पावन सान्निध्य में विशेष सभाएँ आयोजित की गईं। इसके अतिरिक्त आगरा में तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जैन PNC, लखनऊ और कानपुर जैसे बड़े शहरों में भी

सभाएँ करके लोगों से स्व-जनगणना में बढ़-चढ़कर भाग लेने की पुरजोर अपील की गई। हालांकि, इन जनसभाओं के दौरान जब शरद जैन ने लोगों से उनके क्षेत्रों में स्व-जनगणना की तारीखों और भागीदारी के बारे में सीधा सवाल किया, तो वहाँ उपस्थित लोगों में महज एक से दो प्रतिशत की ही जागरूकता देखने को मिली, जो कि समाज के भविष्य के लिहाज से बिल्कुल भी उत्साहवर्धक बात नहीं है। शरद जैन ने हर मंच से इस बात को पुरजोर तरीके से उठाया कि वर्ष 2011 की जनगणना में जैन समाज की सरकारी गिनती मात्र 44,51,753 आई थी, जिसे लेकर हम हमेशा से दावा करते आ रहे हैं कि हमारी वास्तविक आबादी 2 से 3 करोड़ के बीच है और पिछली बार कम गिनती होने के पीछे कई तकनीकी व व्यावहारिक कारण रहे थे। अब समय आ गया है कि समाज अपने उस दावे को ऑन-रिकॉर्ड प्रमाणित करे, क्योंकि यह एक ऐसा स्वर्णिम और ऐतिहासिक अवसर है जब आपकी गिनती किसी सरकारी कर्मचारी के भरोसे नहीं है, बल्कि आपको स्वयं पोर्टल पर जाकर करनी है।

प्रथम चरण में क्या करना है?

सभी जैन बंधु तुरंत आधिकारिक वेबसाइट https://se.census.gov.in पर जाकर इस पहले फेज में अपने-अपने घरों की गिनती (House Listing) दर्ज कराएं। ध्यान रखें कि अभी आपको धर्म, जाति या भाषा की जानकारी नहीं देनी है, यह प्रक्रिया फरवरी 2027 से शुरू होने वाले दूसरे चरण में होगी। अभी सिर्फ मकान और परिवार के मुखिया की बुनियादी जानकारी दर्ज होनी है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एक बार फिर देश के सभी जैन भाइयों, संस्थाओं और युवाओं से पुरजोर अपील करती है कि अपने-अपने क्षेत्र में स्व-जनगणना अभियान को एक आंदोलन बनाएं और स्वयं अपने घरों की गणना सुनिश्चित करें। क्योंकि जब हमारी सही गिनती और असली ताकत सामने होगी, तभी हमें देश में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से पूर्ण मजबूती और अधिकार मिलेंगे।

आगरा में पंचकल्याणक महोत्सव के मध्य हुई इस सभा में आगरा क्षेत्र के लगभग 40 मंदिरों केअध्यक्ष मंत्री एवं पदाधिकारी उपस्थित थे। आचार्य श्री के मंगल आशीर्वाद श्री प्रदीप जैन, पी-एन-सी उपस्थिति, श्री मनोज जैन बाकलीवाल की हुंकार तथा श्री जगदीश प्रसाद जी की पुकार से उपस्थित 31 मंदिरों के पदाधिकारियों ने तुरंत ही अपने-अपने क्षेत्रों के दिगंबर जैन मंदिरों में तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान की। आगरा कमेटी के इस सहयोग से निश्चित ही तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक संबल प्राप्त होगा।

तीर्थ सुरक्षा महाअभियान; लखनऊ के हर जिनालय में रखी जाएगी तीर्थ सुरक्षा गुल्लक, अनेकों श्रेष्ठी बने 'तीर्थ चक्रवर्ती'

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने 125वें स्थापना वर्ष की ओर बढ़ते हुए, शतकोत्तर रजत महोत्सव कार्यक्रम से पूर्व पूरे देश में तीर्थों की सुरक्षा और संरक्षण के प्रति जन-जन में जागरूकता प्रसार के लिए रविवार 03 मई को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के गोमती नगर स्थित अतिशयकारी श्री 1008 चन्द्रप्रभ दिगंबर जैन जिनालय पहुंची, जहाँ लगभग 2000 दिगंबर जैन परिवारों का निवास है। इस मुख्य कार्यक्रम से ठीक पहले तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बु प्रसाद जैन, चेयरमैन श्री जवाहर लाल जैन, प्रचार मंत्री श्रीमती मीनू जैन तथा चैनल महालक्ष्मी के शरद जैन ने डालीगंज जिनालय में विराजित आचार्य श्री सुबल सागर जी महाराज ससंघ के दर्शन कर आशीर्वाद लिया और महोत्सव पर चर्चा की। इसके बाद वर्ष 2002 में आचार्य श्री सौरभ सागर जी की प्रेरणा से निर्मित गोमती नगर जिनालय में कार्यक्रम की शुरुआत हुई, जहाँ पिछले 11 वर्षों से हर माह के पहले रविवार को सामूहिक विधान होता है। जागरूकता कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए अयोध्या से पधारे कमेटी के मंत्री डॉ. जीवन प्रकाश जैन ने संस्था के 124 साल के इतिहास, बड़ी उपलब्धियों और अदालतों में चल रहे मुकदमों की जानकारी देकर समाज से आर्थिक सहयोग की अपील की। इसके बाद चेयरमैन जवाहर लाल जैन ने उत्तर प्रदेश से ही पहली बार राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर गर्व जताते हुए समाज से उनके हाथ मजबूत करने को कहा और सभी उपस्थित जनों को अयोध्या की बैठक तथा 22 अक्टूबर को मथुरा चौरासी में होने वाले भव्य महोत्सव के लिए आमंत्रित किया। इस दौरान चैनल महालक्ष्मी ने सम्मेदशिखरजी और श्रवणबेलगोल में सुविधामय सीढ़ियों के निर्माण से लेकर गिरनार, शिरपुर और केसरिया जी आदि तीर्थों के कानूनी विवादों को लड़कर आज तक दर्शन सुलभ कराने में कमेटी के योगदान को रेखांकित किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बुप्रसाद जैन ने संतवाद और पंथवाद की सीमाओं से ऊपर उठकर संगठन को मजबूत करने पर विशेष जोर देते हुए स्पष्ट कहा कि यदि हमें अपनी संस्कृति बचानी है तो एक होना होगा, क्योंकि आज अचल तीर्थों पर कब्जे और चल तीर्थों पर हमले हमारे कमजोर संगठन का ही नतीजा हैं। इस अपील के बाद पूर्व डीजी अरविंद कुमार जैन ने कमेटी का आभार व्यक्त करते हुए लखनऊ समाज की ओर से पूरे सहयोग का भरोसा दिया, जबकि कार्यक्रम को सफल बनाने में आदीश जैन, सुकांत जैन और निकांत जैन तथा

अन्यों का विशेष सहयोग रहा। इसी मंच से कर्मठ समाजसेवी जागेश जैन को 125वें वर्ष स्थापना कमेटी के अवध संभाग का संयोजक मनोनीत किया गया। समाज की जागरूकता का ही परिणाम रहा कि लखनऊ के लगभग सभी दिगंबर जैन मंदिरों सहित आसपास के क्षेत्रों जैसे बिसवां जैन मंदिर, सिधौली, टिकैत नगर, महमूदाबाद, बाराबंकी और तहसील फतेहपुर में भी 'तीर्थ सुरक्षा गुल्लक' रखने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की गई। इसके साथ ही, सभा में उपस्थित 16 श्रेष्ठियों ने एक-एक लाख रुपये का सहयोग देकर 'तीर्थ चक्रवर्ती' बनने का गौरव प्राप्त किया, जिनके नामों की घोषणा जल्द की जाएगी। इस भव्य आयोजन में उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड अंचल की मंत्री सुनंदा जैन, प्रचार मंत्री मीनू जैन के साथ विभिन्न जिनालयों के प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित थे, जिनमें गोमती नगर से संजू जैन, आलोक जैन, पी के जैन; इंदिरा नगर से रोहित जैन; चारबाग से अखिलेश जैन, संजीव जैन; डालीगंज से पूर्व डीजी ए के जैन तथा आशियाना से बंटी जैन और यहियागंज से समीर जैन आदि मुख्य रूप से शामिल रहे।

कानपुर में 125वें स्थापना वर्ष महोत्सव का शंखनाद: तीर्थों की सुरक्षा के लिए एकजुट हुए महानगर के श्रेष्ठी

शीघ्र ही कानपुर में आयोजित होगा विशाल जागरूकता सम्मेलन

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री जंबू प्रसाद जैन** जी व 125वें स्थापना वर्ष समिति के चेयरमैन **श्री जवाहर लाल जैन** जी की अगुवाई में तथा **श्री संदीप जैन** (पुत्र **श्री प्रदीप जैन**, कत्था वाले) के नेतृत्व में रविवार 03 मई को कानपुर के श्रेष्ठियों के साथ एक विशेष बैठक संपन्न हुई, जो मथुरा चौरसी में आगामी 22 अक्टूबर 2026 को होने वाले 125वें स्थापना वर्ष महोत्सव की जागरूकता व समाज की सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी। इस बैठक में कानपुर जैन समाज के लोग पहली बार अपने क्षेत्र में तीर्थक्षेत्र कमेटी के शीर्ष पदाधिकारियों को अपने बीच देखकर आत्मविभोर हो उठे और उन्होंने कमेटी के कार्यों, उपलब्धियों व योजनाओं की जानकारी समाज तक समय पर न पहुँच पाने को लेकर जिज्ञासा व्यक्त की, जिस पर राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री जंबू प्रसाद जैन** जी ने जैन संस्कृति और दिगंबरत्व की रक्षा के लिए संगठन व तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत करने तथा घर-घर तक जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। वहीं, 125वें स्थापना वर्ष समिति के चेयरमैन **श्री जवाहर लाल जैन** जी ने बताया कि जैन समाज को सभी तीर्थों के निर्विघ्न दर्शन होते रहें, इसके लिए कमेटी अदालतों में करोड़ों रुपये खर्च करके अनेक मुकदमे लड़ रही है, जिसमें समाज का छोटा सा सहयोग भी संस्था को अन्य सम्प्रदायों की तरह मजबूत बना सकता है; साथ ही उन्होंने आगामी अयोध्या बैठक और 22 अक्टूबर को मथुरा चौरसी में होने वाले 125वें स्थापना वर्ष महोत्सव के लिए सभी को भावभीना आमंत्रण दिया।

इसी क्रम में 'चैनल महालक्ष्मी' की ओर से **श्री शरद जैन** ने श्री सम्मेद शिखरजी सिद्धक्षेत्र में कमेटी द्वारा पिछले तीन दशकों में किए गए कार्यों का ब्यौरा देते हुए एक स्पष्ट प्रश्न किया कि शिखरजी जाने वाले अधिकांश यात्रियों का दान कोठी और धर्मशाला की चारदीवारियों के बीच ही सिमट कर रह जाता है न कि सीधे पर्वतराज के संरक्षण के लिए जाता है, जिसे सुनकर वहाँ उपस्थित श्रेष्ठियों ने माना कि वे आज तक इस कड़वी हकीकत से अनजान थे और इस विषय पर देशव्यापी जागरूकता की पुरजोर अपील की गई। इसके साथ ही, प्रचार मंत्री **श्री मीनू जैन** (श्रीमती मीनू जैन) ने महिला मंडलों के सहयोग से 'संकल्प पत्र' के माध्यम से 'घर-घर गुल्लक अभियान' शुरू करने पर जोर दिया, जिसके तहत जैन परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्रतिदिन कम से कम 1 रुपया सहयोग राशि के रूप में जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है, जो महिलाओं के नेतृत्व में एक बड़ा जन-आंदोलन बनेगा। लगभग 22 जैन मंदिरों-चैत्यालयों और 2800 दिगंबर जैन परिवारों वाले कानपुर महानगर की इस बैठक में **श्री संदीप जैन**, **श्री प्रवीन जैन** (एनआरआई), **श्री संजय जैन**, **श्री विनोद कुमार जैन**, **श्री अरुण कुमार जैन**, **श्री सुनील कुमार जैन** (बैंक वाले), **श्री प्रवीन कुमार जैन** और **श्री त्रिभुवन जैन** आदि विभिन्न मंदिरों के पदाधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे, जहाँ सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि शीघ्र ही पूरे कानपुर में एक विशाल जागरूकता कार्यक्रम (महा-सम्मेलन) आयोजित किया जाएगा, ताकि प्रत्येक जैन धर्मावलम्बी को सीधे तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ने और अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराने का स्वर्णिम अवसर मिल सके।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक: अयोध्या जी में हुआ भावी योजनाओं पर मंथन, वर्षभर आयोजित होंगे देशव्यापी कार्यक्रम

अयोध्या में ऐतिहासिक 'शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव' की रूपरेखा सुनिश्चित

तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास हेतु समर्पित **'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी'** अपने गौरवशाली संस्था के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आगामी 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक मनाए जाने वाले **'शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव'** जिसका प्रारंभ अंतिम केवली श्री जम्बूस्वामी सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी में भव्य आयोजन के रूप में किया जायेगा। आयोजन को सफल बनाने के उद्देश्यार्थ रविवार दिनांक १० मई २०२६ को भगवान ऋषभदेव जी की पावन जन्मभूमि, श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र रायगंज, अयोध्या जी में प्रबंधकारिणी समिति एवं शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव समिति की एक महत्वपूर्ण चिंतन मनन बैठक संपन्न हुई।

बैठक की अध्यक्षता कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन ने की। उनके नेतृत्व में देश भर से आए पदाधिकारियों ने मंथन किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कमेटी के 125 वर्षों के कठिन संघर्ष और सेवा कार्यों का स्मरण करते हुए भविष्य के लिए एक मजबूत नींव तैयार करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जी जैन द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। बैठक में उपस्थित सभी का हृदय गदगद हो गया जब परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री 105 **ज्ञानमती माताजी** माताजी ने अपने प्रेरणादायी

उद्बोधन में तीर्थों के प्रकार, महत्व, सुरक्षा, संवर्धन एवं विकास पर प्रकाश डालते हुए समाज को तीर्थ रक्षा के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया, जिससे सभा में नई ऊर्जा का संचार हुआ। माताजी ने कार्यकर्ताओं को 'अंतरंग, बाह्य एवं सामाजिक परिषद' के गठन का सूत्र प्रदान करते हुए तीर्थों के संवर्धन का मंगल आशीष दिया। पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी ने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए कहा कि यह आयोजन 1989 के दिल्ली लालकिला अधिवेशन जैसा प्रभावशाली होना चाहिए। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकारत्न **श्री चन्दनामती माताजी** के मंगल सानिध्य व आशीर्वचन ने इस महोत्सव को नई ऊर्जा प्रदान की।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संतोष जैन पेंढारी** ने बताया कि इस ऐतिहासिक महोत्सव का शुभारंभ **मथुरा** से भव्य स्तर पर किया जाएगा, जिसके लिए **श्री जवाहरलाल जैन** को 'शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव' का **चेयरमैन** नियुक्त किया गया है।

मध्यांचल के अध्यक्ष श्री डी.के. जैन ने अंचल के माध्यम से विभिन्न तीर्थों पर संचालित योजनाओं की जानकारी देते हुए अपनी टीम के पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया, साथ ही सभा में उपस्थित कमेटी के **राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जैन (पीएनसी) आगरा ने ओजस्वी वक्तव्य देते हुए** प्रत्येक कार्यकर्ता एवं उपरोक्त कार्यक्रम में देश के विभिन्न अंचलों से आग्रह किया कि आप सभी अपने अंचलों में घर-घर तक तीर्थक्षेत्र कमेटी को पहुँचाने का कार्य करें और कार्यक्रम का शुभारम्भ 21-22 अक्टूबर 2026 को मथुरा चौरासी में आयोजित होने वाले मुख्य उद्घाटन समारोह की व्यवस्थाओं एवं आवश्यकताओं पर जानकारी प्रस्तुत करते हुए इस ऐतिहासिक आयोजन से जुड़कर उसे सफल बनाने को अपना गौरव बताया।

इस अवसर पर शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव समिति के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री जवाहरलाल जैन (सिकंदराबाद) ने विस्तृत प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए 21 एवं 22 अक्टूबर 2026 को अंतिम केवली श्री जम्बूस्वामी जी की निर्वाण भूमि मथुरा चौरासी क्षेत्र में आयोजित होने वाले ऐतिहासिक समारोह की संपूर्ण रूपरेखा, उद्देश्य एवं व्यवस्थाओं की जानकारी दी। श्री जवाहरलाल जैन ने आगामी कार्यक्रम को सफल बनाने एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी को सशक्त बनाने के उद्देश्य से अपने महत्वपूर्ण विचार व सुझाव सभा के समक्ष प्रस्तुत किया।

महोत्सव के संयोजक **श्री हंसमुख जैन गांधी ने सभा के समक्ष** आगामी कार्यक्रमों की विस्तृत संरचनात्मक कार्य-योजना प्रस्तुत की, जिसमें राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं क्षेत्रीय स्तर के पदाधिकारियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल दिया गया।

बैठक के प्रमुख निर्णय:

- **तीर्थ-चक्रवर्ती योजना:** संस्था की आर्थिक सुदृढ़ता हेतु 'तीर्थ-चक्रवर्ती' योजना शुरू की गई है, जिसमें ₹1 लाख का सहयोग देने वाले भामाशाहों को **'तीर्थ-चक्रवर्ती** उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।
- **संगठनात्मक विस्तार:** अंचलीय समितियों के माध्यम से महिलाओं एवं युवाओं को कमेटी से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।
- **कानूनी एवं तीर्थ सुरक्षा:** गिरनार जी और सम्मेदशिखर जी सहित अन्य तीर्थों पर चल रहे मुकदमों की स्थिति की समीक्षा की गई और उनके प्रभावी समाधान का संकल्प लिया गया।
- **विशिष्ट सम्मेलन:** तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्तावधान में आईएएस, आईपीएस, जजों और वकीलों के विशेष सम्मेलनों के आयोजन पर जोर दिया गया ताकि तीर्थों की रक्षा को मजबूती मिल सके।

कमेटी के पदाधिकारियों ने देश भर के जैन समाज से अपील की है कि वे इस महोत्सव को एक जन-आंदोलन का रूप दें और तीर्थ सुरक्षा के इस महायज्ञ में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने सभी अंचलों से आग्रह किया कि वे इस महोत्सव को एक जन-आंदोलन का रूप दें।

पश्चात् मंत्री डॉ. जीवन प्रकाश जी ने शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति से संबद्ध होकर एक लाख रुपये का योगदान देकर तीर्थ चक्रवर्ती बनने वाले सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया और LED प्रस्तुति के माध्यम से सभी तीर्थ चक्रवर्तियों का परिचय कराते हुए अधिकाधिक नवीन तीर्थ चक्रवर्ती बनने का आह्वान किया, जिससे प्रेरित होकर अनेक महानुभावों ने अपने नाम प्रदान किए। पश्चात् तीर्थ सुरक्षा के प्रति अपना समर्पण व्यक्त करते

हुए निम्नलिखित महानुभावों ने **₹1,00,000/- (एक लाख रुपये)** या उससे अधिक की राशि प्रदान करने का संकल्प लिया-

जिसमें श्री प्रदीप जी (कत्थे वाले) ने 5 लाख रुपये की सर्वाधिक सहयोग राशि समर्पित की। इसके अतिरिक्त, श्री संजय ठोलिया, श्री राजकुमार कोठारी, श्री संतोष जैन पेंढारी, श्री अमरचंद जी (महामंत्री, अयोध्या), श्री सुनील जैन सराफ (कोषाध्यक्ष, जम्बूद्वीप), श्री जोगेश जी (सहादत), श्री सुखचंद जी, श्री संदीप जैन और श्री संजीव जैन (अवध) प्रत्येक ने 1-1 लाख रुपये की राशि की घोषणा कर इस तीर्थ सुरक्षा अभियान को गति प्रदान की।

अंत में, समारोह की व्यवस्थाओं, प्रचार-प्रसार, युवाओं व महिलाओं की सक्रिय भागीदारी, तीर्थों की सुरक्षा, स्वच्छता, व्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण एवं संकल्प पत्र के माध्यम से प्रतिवर्ष आर्थिक सहयोग प्रदान करने जैसे गंभीर विषयों पर चर्चा की गई तथा पूर्ण समर्पण के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़कर जैन संस्कृति के गौरव को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त करते हुए सभी अतिथियों एवं पदाधिकारियों का अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जैन, पीएनसी, श्री संजय पन्नालाल पापडीवाल, राष्ट्रीय महामंत्री: श्री संतोष जैन पेंढारी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अशोक दोशी, मुंबई, राष्ट्रीय मंत्री, श्री हंसमुख जैन गांधी, श्री जयकुमार जैन, डॉ. जीवन प्रकाश जैन, शतकोत्तर महोत्सव चेयरमैन श्री जवाहरलाल जी जैन, श्री जैनेश झांझरी, मध्यांचल अध्यक्ष श्री डी.के. जैन, कर्नाटक अंचल अध्यक्ष हसरी विनोद बाकलीवाल, तमिलनाडु पौड़ीचेरी अंचल अध्यक्ष श्री संजय ठोलिया, राजस्थान अंचल श्री राजकुमार कोठ्यारी, दिल्ली अंचल श्री प्रदुमन जैन श्री सुनील जैन सराफ (कोषाध्यक्ष, जम्बूद्वीप), श्री अमरचंद जी (महामंत्री, अयोध्या), श्री मनोज जी, डॉ. अनुपम जैन (इंदौर), श्री जोगेश जी (बहादुरगढ़), श्री सुखचंद जी, श्री संतोष जैन घडी, (सागर) श्री संजीव जी (अवध) सहित देश भर से पधारे अनेक श्रावक श्रेष्ठी एवं प्रबंधकारिणी समिति के सदस्यगण उपस्थित रहे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी का शतकोत्तर रजत महोत्सव: अब एक ही नारा - 22 अक्टूबर, चलो मथुरा

वैशाख शुक्ल दशमी यानी महावीर स्वामी के ज्ञान कल्याणक दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर फिरोजाबाद के सेठ **श्री नन्नेमल** महावीर जिनालय में चल रहे पंचकल्याणक महोत्सव के दौरान, **श्री राहुल जैन** की अगुवाई में मथुरा चौरसी की कार्यकारिणी और पदाधिकारियों ने परम्पराचार्य **श्री सौभाग्य सागर जी महाराज** एवं स्थविर **श्री सुरत्न सागर जी महाराज** ससंघ के चरणों में वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु भक्तिपूर्वक श्रीफल अर्पित किया। इस मंगल बेला में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत स्थापना समिति के चेयरमैन **श्री जवाहर लाल जैन**, प्रचार मंत्री **श्री मीनू जैन** (श्रीमती मीनू जैन) और चैनल महालक्ष्मी के **श्री शरद जैन** भी विशेष रूप से उपस्थित रहे; क्योंकि 22 अक्टूबर 1902 को इसी मथुरा चौरसी तीर्थ पर कमेटी की स्थापना हुई थी, जहाँ से अब 125वें वर्ष में प्रवेश करते हुए 'तीर्थ संरक्षण-सुरक्षा जागरूकता वर्ष' की शुरुआत की जा रही है और कमेटी चाहती है कि यह महामहोत्सव आचार्य श्री के सान्निध्य में हो। इस निवेदन पर स्थविर आचार्य **श्री सुरत्न सागर जी महाराज** ने गहरी वेदना व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे क्षेत्रों पर लोग कब्जा इसलिए कर लेते हैं क्योंकि हम सबकी मुट्ठी अभी बंधी नहीं है; जिस दिन हमारी मुट्ठी बंध जाएगी, उस दिन कोई हमारे तीर्थों पर उंगली नहीं उठा सकेगा, इसलिए 22 अक्टूबर को तीर्थों के संरक्षण के लिए हम सभी को एक साथ मिलकर मथुरा चलना होगा।

परम्पराचार्य आचार्य **श्री सौभाग्य सागर जी महाराज** ने भी समाज को दिशा दिखाते हुए कहा कि अगर साधु-संत स्वयं आगे बढ़कर तीर्थों को संभाल लें तो तीर्थों की सुरक्षा स्वतः हो जाएगी, लेकिन इसके लिए सबसे पहले समाज के अंदर से 'यह साधु मेरा है, यह संघ मेरा है' जैसा संतवाद समाप्त करना होगा, जिससे साधु रूपी चल तीर्थ की भी रक्षा हो सके। इससे पूर्व चेयरमैन **श्री जवाहर लाल जैन** ने पूज्य संतों से मथुरा चौरसी की इसी ऐतिहासिक धरा पर 125वें वर्ष का मुख्य कार्यक्रम मनाने का आग्रह किया था, वहीं चैनल महालक्ष्मी के **श्री शरद जैन** ने सचेत किया कि यदि हमारे सिद्ध, कल्याणक और अतिशय क्षेत्र नहीं बचे तो हम अपनी संस्कृति नहीं बचा पाएंगे। उन्होंने बताया कि तीर्थक्षेत्र कमेटी पिछले 125 वर्षों से अनवरत अदालतों में मुकदमों की लड़ाई लड़कर हमें सुरक्षित दर्शन सुलभ करा रही है; यदि आचार्य श्री का चातुर्मास यहाँ होता है तो कमेटी गौरवान्वित होगी, साथ ही उन्होंने देश के समस्त संतों से अपील की कि वे वर्ष 2026 व 2027 के चातुर्मास सिद्ध-कल्याणक भूमियों पर ही करें ताकि श्रावकों में तीर्थों के प्रति सुरक्षा और संरक्षण की भावना और अधिक बलवती हो सके।

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
द्वारा आयोजित
व्यावहारिक सुझाव/निबन्ध प्रतियोगिता

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आगामी शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला में 2 प्रतियोगिताऐं आयोजित की जा रही हैं।

- **युवा वर्ग (45 वर्ष से कम) - व्यावहारिक सुझाव प्रतियोगिता, विषयः- ''तीर्थो का विकास कैसे हो?''**
  शब्द सीमा - 1,000 शब्द
- **प्रौढ़ वर्ग (45 वर्ष से अधिक) - निबन्ध प्रतियोगिता, विषयः- 'तीर्थो के सम्मुख चुनौतियॉ एवं समाधान'**
  शब्द सीमा - 3,000 शब्द
- दोनों वर्गो के लिए पुरस्कार अलग अलग हैं।
- प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि **30.06.26** हैं।
- प्रविष्टि ए-4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोज कराकर अथवा सुवाच्य हस्तलिपि में भेजी जानी चाहिए। केवल बाहर के पृष्ठ पर नाम, पता, फोन नं. लिखें, अन्दर कहीं न लिखें।
- स्त्री - पुरूष का कोई भेद नहीं है। भारत का कोई भी नागरिक प्रविष्टि भेज सकता है।
- भाषा हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी भी भाषा में मान्य है।
- आयु के प्रमाण स्वरूप आधार कार्ड की छाया प्रति साथ भेजें। अथवा कोई अन्य प्रमाणपत्र जिसमें जन्मतिथि अंकित हो। आयु की गणना 31 मार्च 2026 को की जायेगी।
- **पुरस्कार राशि -** दोनो वर्गो हेतु अलग-अलग

पुरस्कार राशि -	**प्रथम रु.**	:	**21,000.00**
दोनो वर्गो हेतु	**द्वितीय रु.**	:	**15,000.00**
अलग-अलग	**तृतीय रु.**	:	**11,000.00**

- **आवश्यकतानुसार सांत्वना पुरस्कार भी घोषित किये जा सकते हैं।**
- प्रविष्टि पंजीकृत डाक से भेजने का पता : - डॉ. अनुपम जैन,
  प्रधान सम्पादक - जैन तीर्थ वन्दना
  ज्ञानछाया, डी.14, सुदामा नगर
  इन्दौर 452009
  मोबा. 94250 53822, 95898 83822
- सभी विषयों में अध्यक्ष का निर्णय अन्तिम होगा।

जम्बूप्रसाद जैन
अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढ़ारी
महामंत्री

जवाहरलाल जैन
चेयरमेन-शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रम समिति

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तीर्थ चक्रवर्ती योजना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समारोह के अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक दृढ़ता प्रदान करने उद्देश्य की पूर्ति हेतु 1 लाख रूपए की राशि प्रदान करने वाले महानुभावों को तीर्थ चक्रवर्ती पद से सुशोभित किया जा रहा है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण] संवर्द्धन सुरक्षा तथा व्यवस्था को सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक श्रावकों धर्म प्रेमियों तथा तीर्थ रक्षकों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से मन से जुड़ने की अत्यधिक आवश्यकता है।

इन महानुभावों के द्वारा तीर्थ रक्षा हेतु 1 लाख रूपए का प्रदत्त अनुदान के संबंध में उन्हें तीर्थरक्षक चक्रवर्ती पद प्रदान कर सम्मानित किया गया। निश्चित ही प्राप्त राशि तीर्थों की रक्षा, विकास और व्यवस्थाओं लिए व्यय की जाएगी ऐसा आपको विश्वास दिलाते है।

तीर्थ चक्रवर्ती योजना कमेटी को आर्थिक रूप से सुदृढ़ तो बनाएगी ही साथ ही समाज के प्रत्येक वर्ग को तीर्थो की रक्षा और विकास से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करेगी।

जो सज्जन अब तक निम्नलिखित 'तीर्थ चक्रवर्ती' पद सुशोभित कर चुके है उनका परिचय निम्न प्रकार से है

श्रीमान प्रदीप जैन
कानपुर

श्री संजय जैन सुपुत्र श्री जम्बूप्रसाद जैन
गाजियाबाद

श्रीमान आकाश जैन
खुर्जा

श्रीमती रजनी जैन
लखनऊ

श्रीमान अनिल जैन
इंदिरा नगर, लखनऊ

श्रीमान रोहित जैन
लखनऊ

श्री संतोष जैन पेंढारी,
नागपुर

श्री राजकुमार कोठारी
जयपुर

श्री अमरचंद जी जैन
(महामंत्री, अयोध्या)

श्री संजय ठोलिया,
चेन्नई

श्री सुनील जैन सराफ
(कोषाध्यक्ष, जम्बूद्वीप)

श्री जागेश जैन
(सहादत)

श्री आदिश जैन
लखनऊ

श्री संदीप जैन
लखनऊ

श्री शुभचंद जैन
लखनऊ

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi MAY 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS
VALUE THROUGH GREEN CHEMISTRY

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX GFL GROUP
BEYOND INFINITY

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.